Research & Compilation : 16

SPIRITUAL REJUVENATION

Eternal Knowledge

अध्यात्मिक पुर्नजागरण

शाश्वत ज्ञान

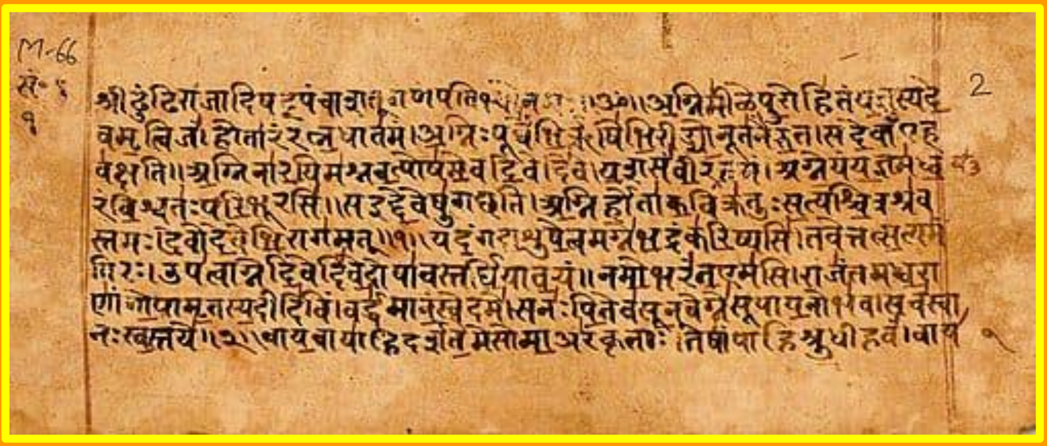

Rigveda : 1.1.1

THOUGHT PAPER

विचार पत्र

Ram Shastri

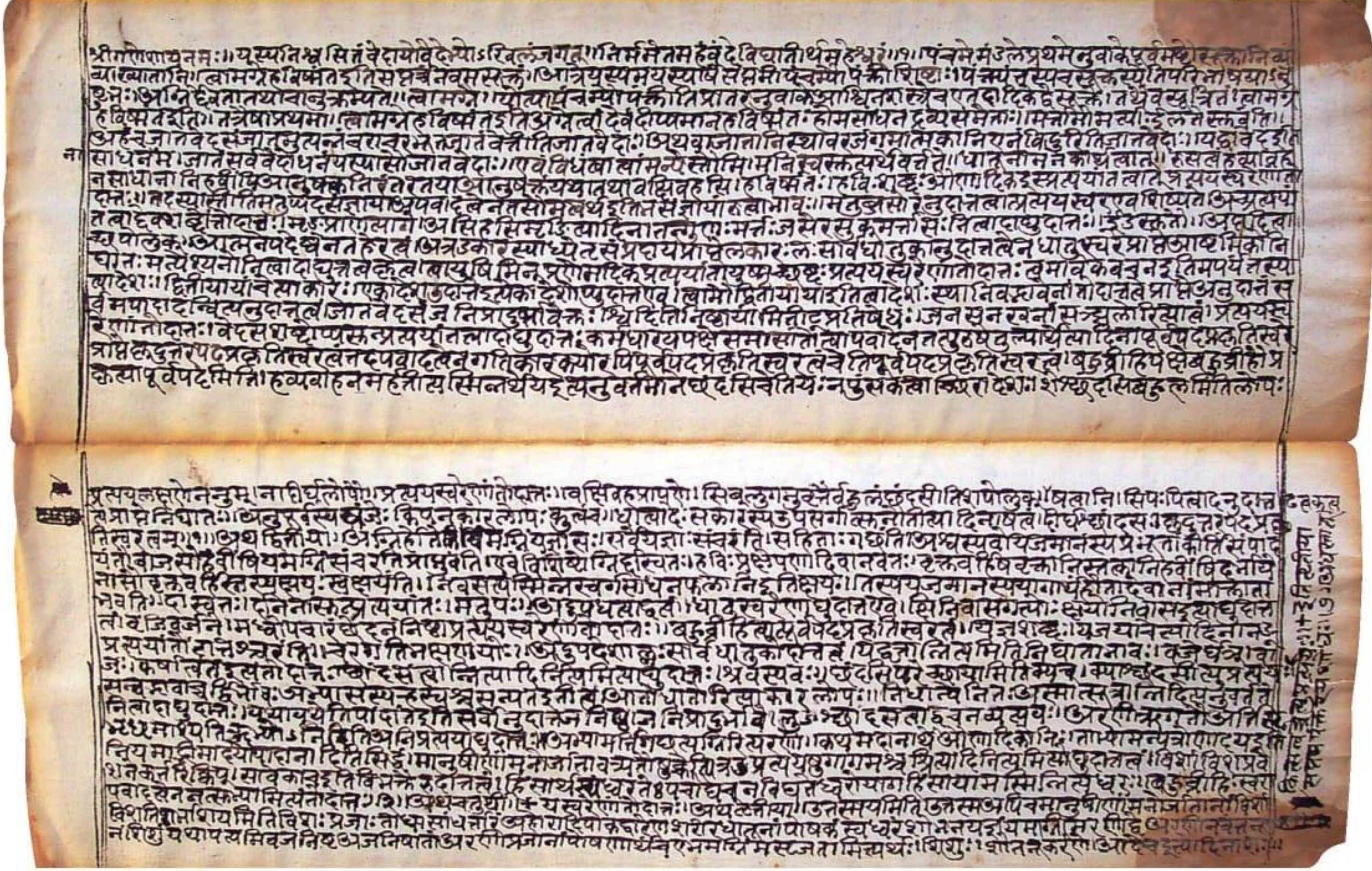

Folios from the *Rigvedapadapatha*, preserved at Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune

Spiritual Rejuvenation

Eternal Knowledge

अध्यात्मिक पुर्नजागरण

शाश्वत ज्ञान

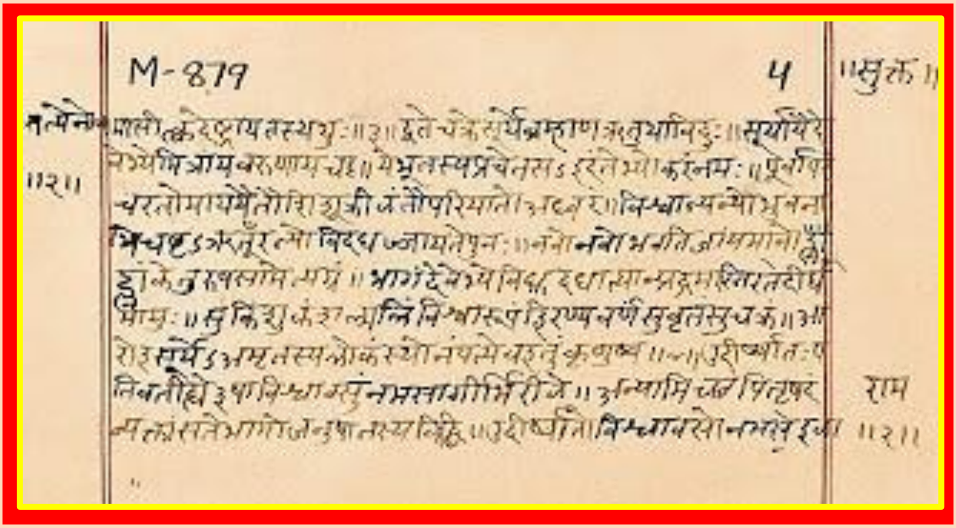

Rigveda : Vivah Sukta 10.85.1-10

THOUGHT PAPER

विचार पत्र

Research & Compilation

RAM SHASTRI

Rashtriya Adhyatmik Punarjagran Abhiyan

M-139

इममेवब्राह्मणवाक्यार्थमेषमनिसत्यरिसमाभ्रेरुत्तरेमंत्राः प्रतिपादयंति किंकारणंब्रह्मजगदुपादानकारणंब्रह्मकि
मन्यद्वाजगदुपादानकारणंब्रह्मकीदृशंशुद्धमविद्यामिलितंवा अथवाब्रह्मकिंकारणमविशेषणनिमित्तोपादनका
रणंवा आहोस्विन्निमित्तकारणमेवकुतःस्मजाता आकाशादिवत्स्थित्यवस्थायांब्रह्मकार्यभूताःसंतःसुषुप्तिप्रलयादिषू
पादानकारणभूतब्रह्ममात्रतयाविलयंगताःसंतःप्रवोधसर्गादिसमयेउपादानकारणभूतब्रह्मणःकार्यत्वेनवयंजाताः
आहोस्विज्जलचंद्रस्थानीयाघटाकाशस्थानीयावावयंसुषुप्तिप्रलयादिषूपाधिविलयेबिंबचंद्रमहाकाशस्थानीयेब्रह्म
ऐक्यमुपगताःसंतःसम्यक्प्रवोधसृष्ट्यादिसमयेब्रह्मविवर्तकार्यकारणादिमंतोबिंबचंद्रमहाकाश ॥॥॥॥

किंकारणंब्रह्मकुतःस्मजाताजीवामकेनक्वचसंप्रतिष्ठाः अधिष्ठिताःकेनसुखेतरेषुवर्तामहेब्रह्मविदोव्यवस्थांइति २

स्थानीयब्रह्मणःसकाशाज्जाताजीवामकेनलद्दर्थैलोद्द जीवामःकेनवयंजीवामोदृष्टेनकिमीश्वरेणवाउताभयेनाहो
स्विल्स्वभावेनक्वचसंप्रतिष्ठाः मोक्षावस्थायामस्माकंविकारभूतेब्रह्मणिकिमेकत्वेनावस्थानं उतस्वतोविकारिणिमाया
मिलितत्वेनविकारिणिब्रह्मणऐकत्वेनावस्थानमाहोस्विदविद्याख्यमायाविद्ययाब्रह्ममात्रतमाप्रविलाप्यविशुद्धेब्रह्म
ण्येकत्वेनावस्थानं क्वचसंप्रविष्टाइत्यस्मिन्पादेमोक्षावस्थायांकीदृग्रूपेब्रह्मणिवयमेकत्वेनावस्थितादृतियोजयितव्यं ४
अधिष्ठिताःकेनकिंब्रह्मकेवलादित्याद्यधिदेवैतैरधिष्ठिताःसंतःसुखेतरेषुसुखदुःखेषुपरवशात्वेनवर्तामहे आहो
स्विदीश्वरेणोतोमाम्यांहेब्रह्मविदःवयंव्यवस्थांविनिर्णयेसहविचिंत्यकुर्मोमेति २॥ रामरामरामरामरामरामराम

अध्यात्मिक पुनर्जागरण
समय की आवश्यकता

देश में नवसांस्कृतिक अध्यात्मिक पुनर्जागरण समय की मांग

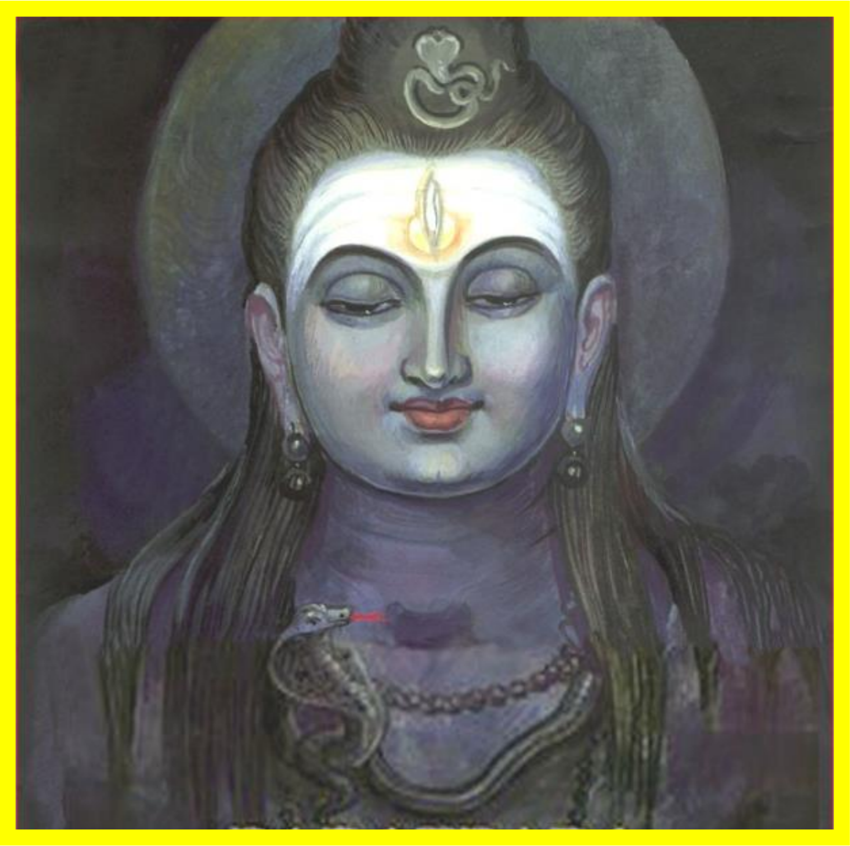

ओमिति ब्रह्म। औमितीदं सर्वम्
(यह सब औंकार रूप ही है।)
ईशानः सर्वविद्यानां ईश्वरः सर्वभूतानाम्
एकं तन्त्रं समाश्रित्य सम्यक् कर्म कृते तथा।
सर्वं तेन कृतं राम तच्च श्री गुरुमार्गतः!!7!!

(त्रिपुरा रहस्य चर्याखण्डः चतुर्थ अध्याय)
मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

अध्यात्म राष्ट्र का प्राण है। अध्यात्म व्यक्तित्त्व के विकास से जुड़ा है। अध्यात्म में उपासना और नैतिकता दोनों ही शामिल रहे। अध्यात्म में भौतिक और अध्यात्मिक विचारों की उन्नति की धारायें एक साथ ही चली। वर्तमान में नवसांस्कृतिक धार्मिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है। वैदिक एवं श्रमण काल से जम्बूद्वीप भरतखण्ड में समय–समय पर नवसांस्कृतिक पुनर्जागरण होते रहे हैं।

धर्म संस्कृति के स्वर्णकाल का उल्लेख शतियों पहले लार्ड मैकाले और जर्मन अध्येता श्री मैक्स मूलर तक ने किया है। श्री मैक्स मूलर ने लिखा कि व्हाट इण्डिया टीच अस, परन्तु वेद का विकृतिकरण करवाया गया। यहाँ भारतीय अध्यात्म और संस्कृति के भावार्थ को समझना आवश्यक है। शाब्दिक रूप से संस्कृति का अर्थ सुन्दर रचना से है। विदेशी विद्वानों ने धर्म और अध्यात्म के अंग्रेजी अर्थ से भ्रामक स्थिति पैदा की है।

इक्कीसवीं शती में श्रुति देववाणी वेद एवं श्रवण की नवीन दृष्टि को प्रस्तुत करना आवश्यक है। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि वैदिक ग्रन्थों में विमानन से स्फोटवाद का उल्लेख है। बीसवीं और उन्नीसवीं शती में वेद के बारे में नवपुनर्जागरण की प्रचण्ड लहरें उठी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद को शूद्र और स्त्रियों तक पहुंचाने का क्रान्तिकारी कदम उठाया। "स्वयं स्वामी दयानन्द ने मुम्बई सम्मेलन में सावधान किया कि यदि उनकी बात गलत लगे तो नहीं माने, अन्यथा यह एक सम्प्रदाय बन जायेगा।" इसी उन्नीसवीं शती में क्रान्तिकारी स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भारतीय संस्कृति की पताका फहराई। ऋग्वेद के अनुसरण में भारतीय धार्मिक सांस्कृतिक चिन्तकों ने "आर्य शब्द को श्रेष्ठ के रूप में

परिभाषित'' किया। स्मरण रहे कि उन्नीसवीं शती में स्वाधीनता का सिंहनाद स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द ने किया।

ऋग्वेद पर नवीन दृष्टिकोण महान् विद्वान रावण एवं बीसवीं शतीं में अध्येता श्री टी.वी. कपाली (कपालेश्वर) शास्त्री सामने रखा। श्री कपाली शास्त्री ने आचार्य यास्क और आचार्य सायण की अवधारणा को सामने रखकर ऋग्वेद के अतिगोपनीय रहस्यों, कूट सांकेतिक भाषा, कूट गोपनीय प्रतीकों के अर्थों को नये समसामयिक कलेवर में प्रकाशित कर सभी को चकित किया। आचार्य यास्क तक ने स्वीकारा कि उन्हें वेद के कुछ कठिन गूढ़ शब्दों का अर्थ नहीं मालूम हैं। ऋग्वेद में एक शब्द कहीं प्रसिद्धि के लिए उपयोगित है तो कहीं खाने के लिए। श्री कपाली शास्त्री ने ऋग्वेद में उल्लेखित गो (गाय), सरस्वती आदि सहित बहुत शब्दों का नया अर्थ लिखकर वेद के बारे में भ्रान्तियों को समाप्त करने का प्रयास किया। महामहोपाध्याय श्री श्रीपाद दामोदर सातवेलेकर आदि भी इसी परम्परा में आते हैं। वैदिक देवताओं अग्नि, रुद्र, वायु, उषा, दो अश्विनीकुमार, सूर्य, इन्द्र, वरुण, पूषा आदि के मन्त्रों के बारे में महर्षि रावण, श्री कपाली शास्त्री, महर्षि अरविन्द, म.म. श्री सातवेलेकर, आचार्य भास्कर राय, पं. भगवद दत्त, श्री गुरुदत्त, श्री रेले आदि ने रहस्यों से पर्दा उठाया। वेदों के मन्त्रों की व्याख्या ब्रह्मण ग्रन्थों, अरण्यकों में मिलती है।

यह अवश्य है कि वेदों का रहस्य लोक ऋषियों–मनीषियों के बौद्धिक वर्ग तक सीमित रहा। स्मृति ग्रन्थों पुराणों कथानकों के माध्यम द्वारा इसे आम जन लोक तक पहुंचाने का भागीरथी प्रयास हुआ। वास्तव में 186 उपनिषत् भारतीय संस्कृति–अध्यात्म–धर्म के स्रोत हैं। लेकिन यह भी आवश्यक नहीं है कि सभी उपनिषदों की सभी कथाओं को माना जाए। वेद, ब्रह्मणग्रन्थ, अरण्यों के तात्त्विक ज्ञान को लेकर धार्मिक अध्यात्मिक पुनर्जागरण की आवश्यकता अनुभव की गई।

उपनिषदों का लेखन धार्मिक पुनर्जागरण से ही हुआ। भारतीय वांगमय की 186 से अधिक उपनिषत् धार्मिक पुनर्जागरण का ही हिस्सा हैं।

ऋषियों ने पुरानी स्मृतियों, संहिताओं को समसामयिक संशोधन कर पुनर्जागरण की आधारशिला रखी। जैसे ऋषि याज्ञवल्कय की संहिता में लिखा है कि "सन्यासी नहीं बनें।" यद्यपि उनके विचारों से अन्य स्मृतियों, संहिताओं के रचनाकार असहमत हैं। प्राचीन ऋषियों के स्फोटवाद का वैज्ञानिक अध्ययन ही नहीं हुआ। प्राचीन काल से ऋषि नाद संगीत की चमत्कारिक शक्ति का उपयोग संस्कृत मंत्र, स्तोत्र, सहस्त्रनाम, कवच आदि के पाठ से करते रहे। मंत्र में शब्द का अनुरणन, आरोह, अवरोह नाभिक है। संस्कृत मंत्र आदि के पाठ में अक्षरों का उच्चारण तीन स्वरों में करने का विधान है।

वेद – ऋग्वेद आयोग का गठन : ऋग्वेद–वैदिक संस्कृत–संस्कृति–विज्ञान पुनरोत्थान हेतु

विश्व एवं भारतवर्ष में विशेषकर सर्वकल्याण, सर्वोदय, सर्वमंगल, लोकसंग्रह आदि की धुरी ऋग्वेद है। वैदिक–विचार, दर्शन, अध्यात्म का ज्ञानकाण्ड ऋग्वेद है। उनतालीस लाख वर्ष प्राचीन ज्ञानकाण्ड–ऋग्वेद कर्मकाण्ड रहित है। ऋग्वेद का सबसे सशक्त पक्ष यह है कि इसमें मननशील मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट पतंग, जीव–जन्तु, वृक्ष–वनस्पति, भूमि, पर्वत एवं नदी (जड़ और चेतन) के कल्याण की प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद में संसार के सभी शुभ विचारों का–ज्ञान का स्वागत किया गया और विश्व परिवार की अवधारणा प्रस्तुत की गई। साथ ही मत्स्य नियम (सर्वावल ऑफ फिटेस्ट) के विचार पर चिन्ता व्यक्त की गई। यहाँ तक की समस्त भौतिक विज्ञान–प्रौद्योगिकी (परमाणु विखण्डन से अंग प्रत्यारोपण) से लेकर राज्य व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, समाजविज्ञान आदि का सूत्रात्मक वर्णन ऋग्वेद में है। ऋग्वेद विश्व के हिंसा रहित रहने का पक्षधर है। इस प्रकार विश्व के सभी धर्मशास्त्रों के आचार–विचार–अध्यात्म–दर्शन का मूलाधार ज्ञानकाण्ड–ऋग्वेद है।

सीरिया में 3000 वर्ष पूर्व का ऋग्वैदिक शिलालेख, मित्तानी लिपि में

"वैश्विक अध्यात्मिक गुरु" के रूप में जम्बूद्वीप भारतवर्ष का एकमात्र वेद–ऋग्वेद विगत हजारों–हजारों वर्षों से रहस्यमय पहेली बना है।" ऋग्वेद की संस्कृत (वैदिक संस्कृत) वर्तमान लौकिक संस्कृत से भिन्न है।" वैदिक संस्कृत मूलभूत रूप से–प्रतीकात्मक, संकेतात्मक, कूटात्मक, अभिव्यंजनात्मक, बहुअर्थी (एक ही शब्द के 50 अर्थ तक), सूत्रात्मक, ध्वन्यात्मक, रहस्यात्मक, गूढ़ात्मक, अध्यात्मपरक, दर्शनपरक, अलंकारत्मक, संहत, संक्षिप्त आदि है।

महान् वेदज्ञ लंकेश्वर महर्षि रावण ने "ऋग्वेद का दर्शन परक भाष्य" किया है। महान् शैव अभिनवगुप्त ने तन्त्रालोक (दसवीं शती) में स्पष्ट किया है कि "राव" की दसवीं ध्वनि मोक्षदायक है। यह "राविणी विद्या" है। आचार्य टी. वी. कपाली शास्त्री ने ऋग्वेद के भाष्य की भूमिका में लिखा है कि ऋग्वेद के एक शब्द का एक ऋचा में अर्थ "भोजन सामग्री" और दूसरी ऋचा में अर्थ "प्रसिद्धि" है। ऋग्वेद में सर्वाधिक प्रयुक्त "अश्व" शब्द के प्रमुख अर्थ हैं –

''परमेष्ठी, परम पुरुष, काल, यज्ञ, अग्नि, मन, सूर्य, सोम, सृष्टि, गति, आत्मा, शक्ति, बल, घोड़ा'' आदि।

संस्कृत विश्वविद्यालय : ऋग्वेद विशेषज्ञ विहिन

वैदिक भूमि भारतवर्ष के संस्कृत विश्वविद्यालयों–संस्कृत संस्थानों आदि में शीर्ष पद पर ऋग्वेद में – शास्त्री (स्नातक), आचार्य (स्नातकोत्तर), महाशोध प्रबन्ध (पीएचडी), महामहोपाध्याय (डीलिट) आदि डिग्री धारी नहीं हैं? विश्वविद्यालयों–महाविद्यालयों–संस्थानों में ऋग्वेद के अध्येताओं का अभाव है। लौकिक संस्कृत में न्याय, तन्त्र, रस, वैशेषिकी, काव्य, दर्शन आदि में महाशोध प्रबन्ध (पीएचडी) कर्त्ता हैं। इस विषम परिस्थिति में भारतवर्ष के अध्यात्मिक गौरव के प्रतीक ऋग्वेद का अनुशीलन कौन करे? क्षमा करें! गोविन्द गुरु विश्वविद्यालय में एक समय अंग्रेजी के व्याख्याता को वेद पीठ सौंपी गई थी?

ऋग्वेद की मूल पाण्डुलिपि विदेशी संग्रहालयों में

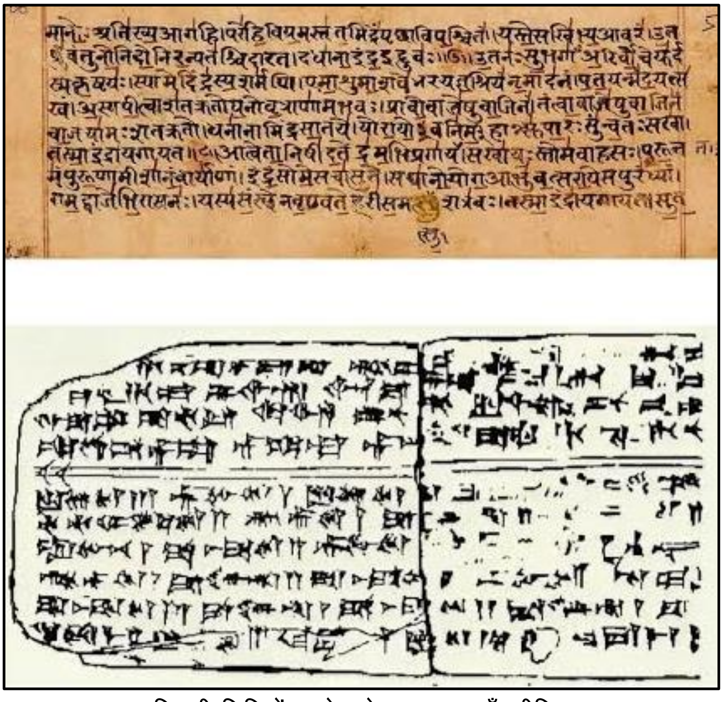

मित्तानी लिपि में ऋग्वेद के समान ऋचाएँ, सीरिया

चौंकें नहीं! ''लगभग 2300 वर्षों से ऋग्वेद की मूल पाण्डुलिपियाँ विदेशों में है।'' ईसा पूर्व 300 वर्ष पहले यूनानी यवन अलक्जेण्डर (सिकन्दर) ने तत्कालीन भारतवर्ष विजय के लिये आक्रमण किया। इतिहासकारों के अनुसार यवन सेनानी ''अलक्जेण्डर के धार्मिक गुरु ने उनसे भारतवर्ष से ऋषियों द्वारा रचित आर्षग्रन्थ और उनके विद्वान् लाने का निर्देश दिया।'' उस समय ''विश्वविख्यात तक्षशिला विश्वविद्यालय'' आम्बदेश (वर्तमान रावलपिण्डी के समीप) में रहा। आम्बदेश के नरेश आम्बी ने विजेता अलक्जेण्डर से संधि की। यवन आक्रामक ''तक्षशिला विश्वविद्यालय से असंख्य आर्षग्रन्थों (ऋग्वेद सहित) की पाण्डुलिपियाँ और विद्वान् अपने साथ ले गया।'' इतना ही नहीं ''तक्षशिला विश्वविद्यालय के पाण्डुलिपियों के ग्रन्थागार को छह महिने जलाया गया।''

2500 वर्ष प्राचीन : तक्षशिला विश्वविद्यालय, आम्बदेश

इसतरह 2300 वर्ष पूर्व ऋग्वेद आदि की पाण्डुलिपियाँ इन्दुद्वीप (यूरोप) पहुँची। वर्तमान में ग्रीस, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि के संग्रहालयों में भारतवर्ष की वैदिक धरोहर शोभायमान् है। उन्हें भारतवर्ष लाने की परम आवश्यकता है। यह दुःखद प्रसंग है कि उन्नीसवीं शतीं में स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु विरजानन्द ने उनसे ऋग्वेद आदि का प्रचार–प्रसार करने को कहा। उन्हें ऋग्वेद जर्मनी से मंगवाना पड़ा। उन्नीसवीं शती में ''एशियाटिक सोसायटी''

ने महान् विद्वान् ''रावणकृत ऋग्वेद'' के भाष्य के कुछ अंश प्रकाशित किये। यह यज्ञप्रश्न है कि ''रावणकृत ऋग्वेद का भाष्य पाण्डुलिपि कहाँ है''?

लॉर्ड मैकाले–मैक्समूलर : वेद विकृतिकरण

लॉर्ड मैकाले का सन् 1838 का ब्रिटिश संसद में भाषण अहम् है। ऋग्वेद में – मातृसंस्कृति–मातृभाषा–मातृभूमि को इळा, भारती एवं सरस्वती की संज्ञा दी गई है। उन्नीसवीं सदी तक भारतवर्ष में वैदिक परम्परा में ''विद्यादान एवं ओषध (चिकित्सा) दान'' जारी रहा। मैकाले की महायोजना के अन्तर्गत वेद का विकृतिकरण किया गया। पश्चिमी विद्वानों ने वेद को आदम प्रलाप कहा। इसी शृंखला में दो विद्वानों ने दो ग्रन्थों में कथित शोध आधार पर घोषित किया कि आर्य उत्तरी ध्रुव अथवा साईबेरिया से आये। परिणामतः आर्य एवं द्रविड अलगाव पैदा किया गया। वेद में ''आर्य'' शब्द का अर्थ ''श्रेष्ठ व्यक्ति'' है। डॉ. सम्पूर्णानन्द ने ''आर्यों के आदिदेश''ग्रन्थ (प्रकाशन सन् 1943) में रहस्योद्घाटन किया कि ऋग्वेद की 39 लाख वर्ष पूर्व दृषद्वती एवं सरस्वती महानदियों के मुहानों पर रचना हुई।

वेद : प्रारम्भ में एक ही वेद

मूल 1,00,000 ऋचाएँ

ऋग्वेद : ज्ञानकाण्ड

21 से अधिक शाखाएँ

3 उपलब्ध, 18 विलुप्त

ऋग्वेद : अधिकारिक भाष्यकार

परमाचार्य लंकेश्वर रावण (अनुपलब्ध) (दर्शन परक), आचार्य सायण, आचार्य टी.वी. कपाली शास्त्री (अध्यात्मपरक, स्पष्ट व्याख्या), स्वामी दयानन्द सरस्वती,

आचार्य श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,
आचार्य भगवदत्त
ऋग्वेद ज्ञानकाण्ड की ऋचाएँ
यजुर्वेद एवं सामवेद में हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थ

कुल संख्या : 1111
उपलब्ध : 19–20

आरण्यक

कुल संख्या : 1121
उपलब्ध : 9

उपनिषत्

कुल संख्या : 1023
उपलब्ध : 186

ऋग्वेद काल

आर्यों का आदिदेश 39 लाख वर्ष पूर्व
(डॉ. सम्पूर्णानन्द, सन 1943), पश्चिम एशिया एवं ऋग्वेद

श्रुति

वेद त्रयी

ऋग्वेद – ज्ञानखण्ड

यजुर्वेद–कर्मकाण्ड
सामवेद–ऋचा गायन–पाठ
ब्राह्मण ग्रन्थ
आरण्यक
उपनिषत् (186 उपलब्ध)
आथर्वण ऋषि की अथर्व संहिता को इसके बाहर रखा गया है।

उपवेद–वेदांग

उपवेद : 4

आयुर्वेद
धनुर्वेद
गन्धर्ववेद
अथर्ववेद

वेदांग : 6

शिक्षा
व्याकरण
छन्द
निरुक्त
ज्योतिष
कल्प

दर्शन : 6

मीमांसा
न्याय
सांख्य
वैशेषिक
योग
वेदान्त

सूत्र : 2262 कुल

प्रमुख

श्रौत सूत्र

शुल्ब सूत्र

गृह्यसूत्र

धर्मसूत्र

स्मृति : 20 संख्या (विलुप्त 108)

धर्मशास्त्र

याज्ञवल्क्य

पराशर

एवं 25 अन्य

पुराण उपपुराण

महापुराण – 18

उपपुराण – 18

इतिहास

रामायण (अनेक), जैसे कम्ब रामाण आदि।

जय संहिता (8800 श्लोक)

भारत संहिता (25000 श्लोक)

महाभारत (1,00,000 श्लोक)

महाभारत (अनेक, जैसे शबर महाभारत)

200 गीता (200 से अधिक, उपलब्ध 70–90)

निघण्टु

निरुक्त

वैदिक शब्द कोश

कुल 16

उपलब्ध 5

प्रमुख रचयिता : 15

उपमन्यु, गालव, शाकपूणि, कथक्य, कश्यप, शाकाटायन, तैतिकी, गार्ग्य, ओनभव, यास्क आदि। आचार्य यास्क 13वें अथवा 14वें निघण्टुकार माने गये हैं। व्युत्पत्ति, शब्द व्याख्या, स्पष्टीकरण, दुष्टकाव्य, काव्यबंध।

वेदादि कहाँ

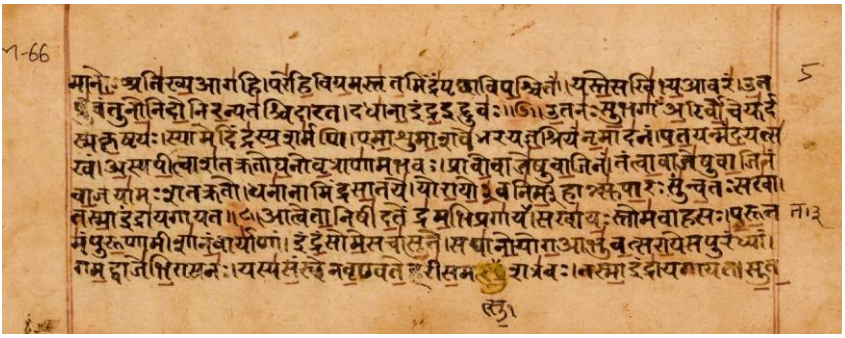

2300 वर्ष पूर्व यवन विजेता यूनानी राजा अलक्जेण्डर ने जम्बूद्वीप पर आक्रमण किया। उस समय आम्बदेश, भारतवर्ष का तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्वविख्यात रहा। आम्बदेश के राजा आम्बी ने अलक्जेण्डर के सामने समर्पण किया। उल्लेखनीय है कि आक्रमण अलक्जेण्डर अपने साथ तक्षशिला विश्वविद्यालय की वेदादि की

पाण्डुलिपियाँ और उनके विद्वान साथ ले गये। तक्षशिला विश्वविद्यालय में शेष पाण्डुलिपियाँ छह माह जलायी गई। इस तरह ईसा पूर्व 300 वर्ष पहिले वेदादि भारतवर्ष से बाहर गये।

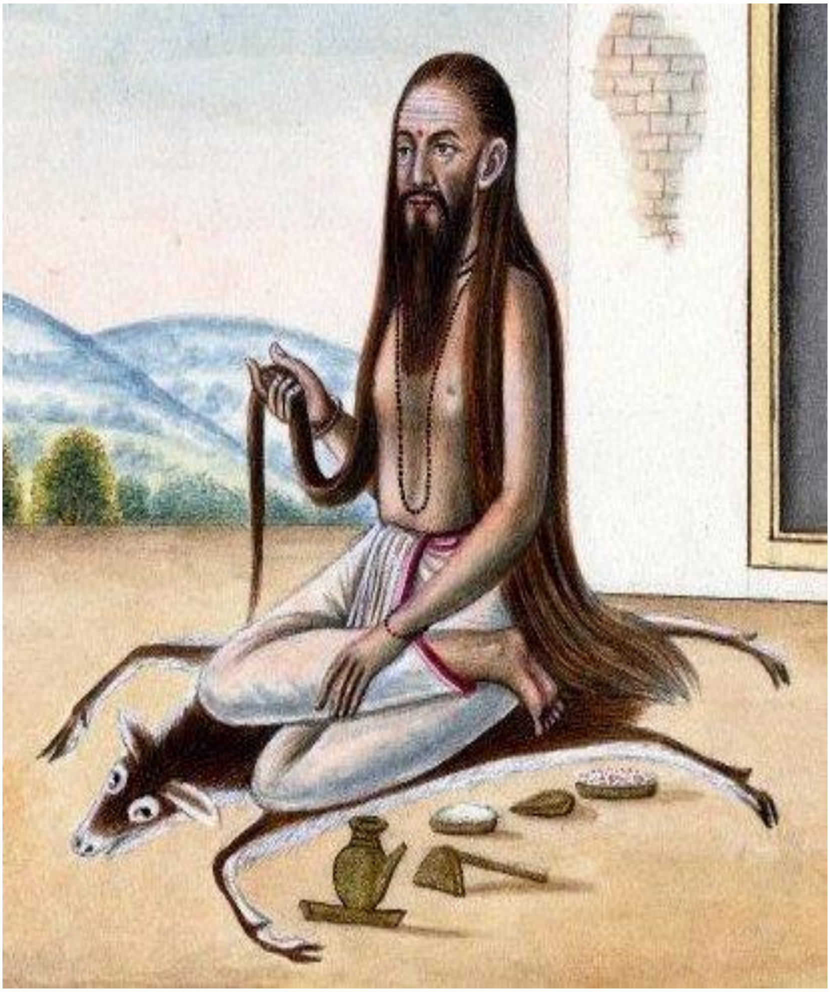

भारद्वाज मुनि

दिव्य शक्ति एवं चमत्कारी संत :
विज्ञान के लिए रहस्य

बीसवीं शती में हिमालय की देवभूमि ज्ञानगंज में दीक्षित परमहंस विशुद्धानन्द सूर्य की शक्ति एवं मन्त्रों से मृत चिड़िया को पुनर्जीवित

करने का चमत्कार दिखाते थे (देखे श्री पॉल ब्रण्टनः सर्च ऑफ सीक्रेट इण्डिया)। परमहंस विशुद्धानन्द सम्यक ध्यान से सैंकड़ों किलोमीटर दूर पहुचने और उपचार करने में सक्षम थे। अथर्ववेद को समर्पित शंकराचार्य ज्योतिष पीठ के पूर्व जगदगुरु शंकराचार्य श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती भी ज्ञानगंज में गये, परन्तु वापस लौटे। श्री सी. डब्ल्यू. लीडबीटर ने हिमालय में निश्चित दिन परम ब्रह्म ईश्वर के आने का विवरण "मास्टर्स पथ में लिखा। भगवान महादेव रुद्र शिव के पवित्र कैलाश मानसरोवर में भष्म लगाए नंगधड़ंग लंगोटधारे साधु कैसे घूमते हैं? वैदिक मन्त्रों को लोक तक ले जाने के लिए सामान्य हिन्दी में शाबर मन्त्र भी वही चमत्कार रखते हैं। आदिशंकराचार्य और नवनाथ के गुरु गोरक्षनाथ ने अपने समय में धार्मिक पुनर्जागरण का सिंहनादकर भारत को एक सूत्र में पिरोया। देश में उत्तर से सुदूर दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक धार्मिक अध्यात्मिक अनुष्ठान, पूजा अर्चना संस्कृत के मंत्रों से ही होती है।

सप्तऋषि

विश्वभर के वैज्ञानिक जमीन के नीचे यूरोप की प्रयोगशाला में ''परमेश्वर तत्त्व'' के अनुसंधान में लगे हैं। वे सूक्ष्म से भी सूक्ष्म परमेश्वर तत्त्व की सृष्टि का जन्मदाता मानकर रहस्य जानने में हैं। क्या परमेश्वर तत्त्व को प्राप्त किया जा सका? भारतीय दर्शन में ब्रह्म अथवा परमेश्वर को सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतम और विशाल से भी विराटतम अनन्त रूपाकारवाला स्वीकारा गया है। भारतीय आर्ष ग्रन्थों के अनुसार ब्रह्म के सूक्ष्मतम अदृश्नीय रूप परमशून्य में नाद हुआ और सृष्टि की रचना हुई। इस ब्रह्म को देखा नहीं जा सकता, केवल अनुभूति अन्तःकरण में की जा सकती है।

वास्तव में पश्चिमी जगत की समस्या यह है कि वह भारतीय पराविद्या को प्रयोग के धरातल पर देखना चाहता है। देश में महादेवी श्रीतारा के महातान्त्रिक वामाखेपा चमत्कारिक शक्ति से असाध्य रोगों का उपचार करते थे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द में शक्तिपात किया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस महाकाली को स्वयं भोजन कराते। यद्यपि वैज्ञानिक सोचवालों को यह दृष्टान्त गल्प लगेंगे।

अंगिरा ऋषि

यह सैंकड़ों वर्षों से रहस्य है कि हिमालय में अदृश्य कौशिकाश्रम, वासिष्ठाश्रम, विश्वमित्राश्रम, ज्ञानगंज, कलापग्राम आदि में हजारों वर्ष की उम्र के साधु कैसे रह रहे हैं? थियोसोफिकल सोसायटी और स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस, ज्योतिषपीठ के जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती आदि के दृष्टान्तों ने इसकी पुष्टि की है। विज्ञान के लिए यह आश्चर्य होगा कि हमारों वर्ष के तपस्वी हिमनद (ग्लेशियर) के बीच कैसे रहते हैं, उनका खानपान, दिनचर्या क्या है? इन चमत्कारी अदृश्य दिखनेवाले आश्रमों में विशेष रूप से चयनित छात्रों को सूर्य विज्ञान, वायु विज्ञान, स्वर विज्ञान, आकाश विद्या, श्रीविद्या, शब्दविद्या, अग्निविद्या, नक्षत्रविद्या आदि की शिक्षा दीक्षा दी जाती रही। विगत में 165 वर्ष शंकराचार्य ज्योतिषपीठ पर पीठाधीश्वर नहीं होने से मठों की दुर्दशा थी। जगदगुरु शंकराचार्य बनते ही श्रीविद्या दीक्षित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने इस दैविक शक्ति से मठों का जीर्णोद्धार करवाया। यह अवश्य है कि "इन दैविक शक्ति के अदृश्य आश्रमों का कठोर नियम हैं कि जाननेवाला दूसरे को नहीं सिखायेगा।" अतः वाराणसी में सूर्य विज्ञान सिखाने की प्रयोगशाला निर्माण शुरू करते ही ज्ञानगंज से पत्र आया। जिसमें सूर्य विज्ञान सिखाने की प्रक्रिया छेड़ते ही चमत्कारिक शक्ति समापन की चेतावनी दी गई। सो, आज तक काम अधूरा है।

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज को मुम्बई के टाटा संस्थान ने असाध्य रोग बताया। म.म. गोपीनाथ कविराज के गुरु ने उनका कुर्ता बनियान उतरवाकर सीने पर हाथ फेरा और रोग गायब हुआ। इसकी कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकती है। इसी क्रम में जयपुर के पूर्व राजगुरु पण्डित विद्यानाथ ओझा की कथा है। राजगुरु पण्डित विद्यानाथ ओझा गठिया के कारण दीवान पर बैठे–बैठे ही लघुशंका पात्र में करते। उन्होंने मंत्रपाठ से सभी पवित्र नदियों का आह्वान किया और कमरा सुगन्धित हुआ।

नाथ योगी भर्तृहरिजी की समाधि पर औघड़ मस्ताबाबा रहा करते थे। मस्ताबाबा आनेवाले के बैठते ही उसकी समस्या हल और पिछली जिन्दगी का बयान करते। वैसे मस्ताबाबा निरक्षर थे, परन्तु कभी कभी

संस्कृत, विशुद्ध हिन्दी और अंग्रेजी में बतियाते। वे श्रीभर्तृहरिनाथ के झरने के पानी और धूणे की भभूत को ही सभी रोग हरनेवाला बताते। उनकी चमत्कारी शक्ति के गवाह जयपुर घराना कथक नृत्य के अन्तिम गुरु पण्ड़ित चरण गिरधर चांद (वर्तमान में सिंगापुर में) है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम के गुरु वसिष्ठ मुनि के पौत्र महर्षि पराशर की यज्ञस्थली (मत्स्य) के आश्रम के महन्त प्रेमदास, महन्त जगमोहनदास के भी चमत्कारों के अनेक साक्ष्य हैं। यह बात अलग है कि वैज्ञानिक समाधि के झरने के पानी और भभूत पर प्रश्न करेंगे?

श्री टी.वी. कपाली शास्त्री

महान संत रमण महर्षि ने स्वयं श्री टी.वी. कपाली शास्त्री को सम्बोधित कर बुलाया और सिर एवं शरीर पर हाथ फेरा। श्री टी.वी. कपाली शास्त्री ने ऋग्वेद का भाष्य, श्री रमण गीता सहित 50 अध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की। बाबा नीब करौली, तेलंग स्वामी, लाहड़ी महाशय, स्वामी योगानन्द परमहंस, तंत्र स्वामी रमादत्त शुक्ल, श्रीपीताम्बरापीठ के श्री अनन्तस्वामी आदि सहित अनन्त साधु दैविक चमत्कारिक शक्ति सम्पन्न और हैं। अमेरिकी अरबपति भी बाबा नीब करोली के शिष्य बने। देश के सूफी संतों, जैन संतों की चमत्कारिक शक्तियों की अनेक कथायें सुनी जा सकती हैं।

यह विचारणीय है कि सैकड़ों किलोमीटर दूर बैठे बाबा आँखों देखा आपका हाल कैसे सुनाते हैं? उन्हें कैसे जानकारी मिलती है कि आपके घर परिवार में क्या समस्या है? इसमें पाखण्ड़ी और ढ़ोगियों से दूर रहने या बचने की आवश्यकता हैं। यह सबसे दुखद है कि पराशक्ति तांत्रिक शक्ति के नाम पर पाखण्डियों ने कारोबार फैलाया है। परिणामतः पराविद्या के वास्तविक साधकों को समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

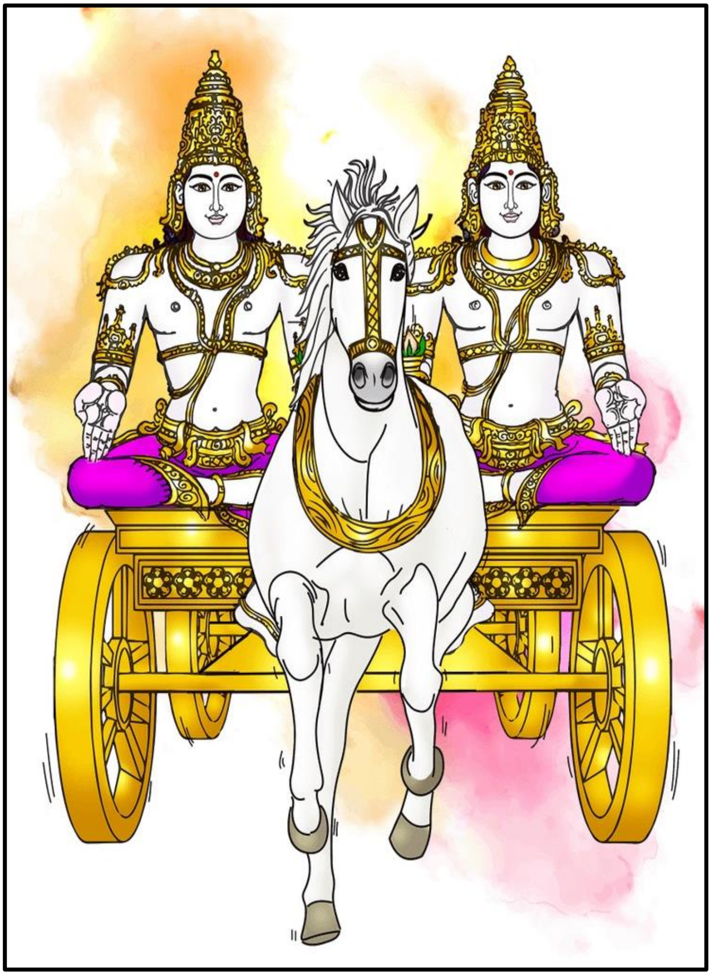

श्री अश्विनौ देवता, देव चिकित्सक

वेद में देवताओं के चिकित्सक दो अश्विनी कुमार मानव शरीर पर पशु सिर प्रत्यारोपण, सभी अंग बदलने आदि प्रदर्शन करते रहे। वेद से लेकर

उपनिषद् तक गम्भीर रोगों के उवचार के लिए जड़ी बूटियों का वर्णन मिलता है। इसी विद्या के आधार पर कुछ साधक देश में अस्थमा, पीलिया आदि का जड़ियों से उपचार करते हैं। भारतीय मनीषा में उल्लेख है कि हिमालय में दिव्य जड़ियां मिलती हैं। हिमालय की जड़ी बूटी में सामान्य से अधिक विकिरण (रेडियेशन), खनिज स्टेराइड़ आदि होता है। यह रेडियेशन, स्टेराइड क्यों अभी अनुत्तरित है? मुम्बई के पास समुद्र, द्वारका के पास समुद्र और अयोध्या में भूगर्भ समुद्रतल में हजारों वर्ष प्राचीन शेष होते अवशेष मिले हैं। इनसे मानवीय सभ्यता पांच हजार वर्ष पुरानी होने की पश्चिम की अवधारणा के धुर्रे उड़ते हैं। यह रहस्य खुलना शेष है कि पराविद्या के यंत्र, ताबीज आदि कैसे काम करते हैं ? इसीतरह मंत्र विद्या के साधकों की चमत्कारिक शक्तियों का रहस्य अभी रहस्य बना है।

मध्य काल में सन्त कवियों ने भक्ति के माध्यम से धार्मिक पुनर्जागरण का यज्ञकुण्ड दहकाया। भक्त संतों ने धार्मिक पाखण्ड को जड़ से

उखाड़ फैंकने का प्रयास किया। पिछले 300 वर्षों में ब्रितानी गुलामी के दौरान साधु सन्त स्वतंत्रता के लिए लड़े और शहीद हुए। इन साधु सन्त स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास कहीं नहीं लिखा गया।

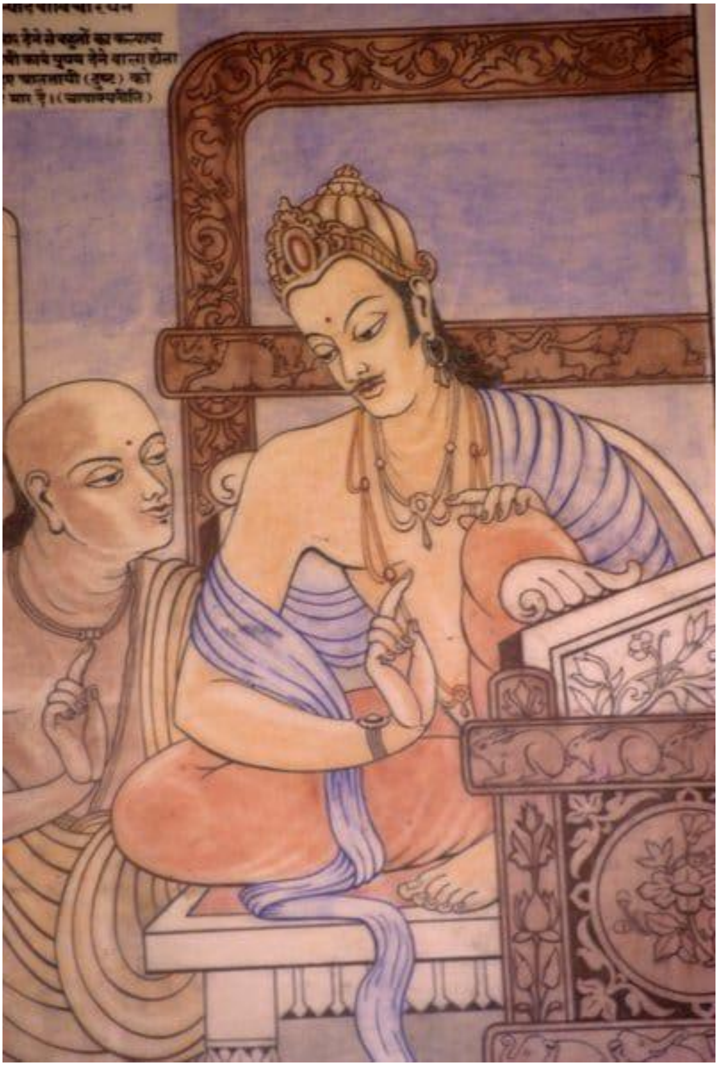

सम्राट चन्द्रगुप्त एवं आचार्य चाणक्य

हमें ईसा पूर्व आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य के कौटल्य के अर्थशास्त्र की रचना को भारतीय बौद्धिक गौरव को प्रतीक कहना चाहिए। हमारे

सांस्कृतिक मूल्यों में शासन के धर्मनीति से चलाने को कहा गया है। धर्म का अर्थ न्यायपूर्ण, सत्य, ऋत आदि लिया जाना चाहिए। यह बात अलग है कि भारतीय वसुधेव कुटम्बकम की अवधारणा को विश्व ने स्वीकारा है। सन 1838 से और विशेष कर स्वतन्त्रता के बाद देश पर आकाश से अपसंस्कृति का प्रचण्ड आक्रमण हुआ। भारतीय सांस्कृतिक के नैतिक मापदण्ड़ों को चीर–चीर किया गया।

वेद से लेकर उपनिषत् ग्रन्थों की उपेक्षा की जा रही है। यह दुर्भाग्य है कि भारतीय विद्या विदेशों से कलर थैरेपी, रेकी के रूप में लौटती है तो उसके लिए पलक पांवड़े बिछाए जाते हैं। यह घर का जोगी जोगणा, आण गांव का सिद्ध कहावत चरितार्थ करती है। इससे अध्यात्मिक सांस्कृतिक धार्मिक पुनर्रोत्थान नहीं होगा? 39 लाख वर्ष पूर्व के वेद, उपनिषद आदि को वर्तमान सन्दर्भ में नवीन दृष्टि को पेश करना समय की मांग है। संस्कृत के विशेष संस्थान इनको लेकर शोध अनुसंधान कर महारथी विद्वान् सृजित करें। वैदिक संस्कृति के रहस्य को मानव जाति के उत्थान के लिए अध्यात्मिक को लोक तक पहुचाने के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण चले। स्मरण रहे कि भारतीय विचार अध्यात्म है।

अध्यात्म संस्कृति ही भारतीय ऊर्जा, अस्मिता

भारतीय संस्कृति विश्वभर में अन्यतम है। विभिन्न कालखण्डों में विशेष कारणों से यहाँ की ऊर्जा एवं अस्मिता के धूल धूसरित एवं आक्रान्त होने के कारण समय पर अनेक पुनर्जागरण होते रहे हैं। वर्तमान में 19वीं शती में पुनर्जागरण एवं राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त होने को सब कुछ मान लिए जाने से समग्र, सर्वांगीण विकास नहीं हुआ। परिणामस्वरूप मानसिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक समग्र सांस्कृतिक विकास नहीं हुआ। इसका मूलभूत कारण औपनेवैशिक दासतां रही। लॉर्ड मैकाले के ब्रिटिश कालीन कानून, वहीं शिक्षा पद्धति, वही सोच हावी है। हमारी

स्पष्ट मान्यता है कि नेताजी सुभाष चन्द्रबोस, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार पटेल आदि असंख्य स्वप्न दृष्टाओं की परिकल्पना का क्रियान्वन ही नहीं हुआ। जिससे भारतीय सांस्कृतिक जागरण समग्र रूप में उद्घाटित हो सके। भारतीय अध्यात्मिक मनीषा एवं ऊर्जा, प्रतिभा को पुनर्स्थापित किया जा सके।

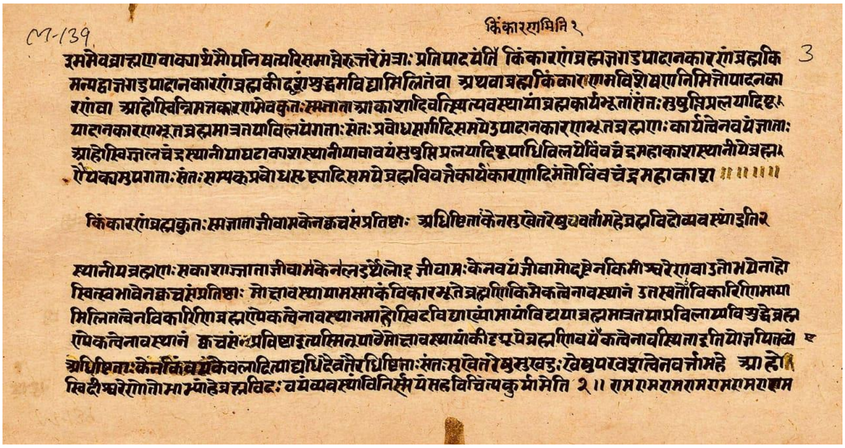

श्वेताश्वतर उपनिषत्

यहाँ उल्लेखनीय है कि अध्यात्म पुनर्जागरण हमारा स्वभाव एवं आवश्यकता है। हमारे बाह्य ऐन्द्रिक जागरण के साथ साथ बौद्धिक, मानसिक, चेतनागत सांस्कृतिक, अध्यात्मिक सौन्दर्य अपेक्षित होता है। इसीलिए श्रुति देववाणी वेद में जागृयाम पुरोहिताः का सिंहनाद किया गया। वर्तमान में अध्यात्मिक सांस्कृतिक संक्रमण एवं क्षरण बहुत तेज गतिसे हो रहा है। यह बहुत चिन्ता का विषय है। यही अध्यात्म भारतीय का प्राण तत्त्व है। यही अध्यात्म जिजीविषा का आधार है। यह विडम्बना है कि सतही रूप से धार्मिक, अध्यात्मिक प्रचार – प्रसार चौतरफा दिखाई देता है। इसके विपरीत तत्त्वतः बाजारवाद, मनोरंजनपरकता, व्यावसायिकता, कारोबारीवाद के भीषण प्रहार के फलस्वरूप भारतीय अध्यात्मिक स्वरूप, ऊर्जास्विता लुप्त हो रहे हैं। इसे पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए नवपुनर्जागरण की महती आवश्यकता है।

चमत्कारिक दैविक अध्यात्मिक ग्रन्थ एवं संगीत भारतीय विचार

विश्व में सांस्कृतिक रक्तरंजित महासंघर्षों में एक बार फिर अध्यात्मिक ग्रन्थ एवं संगीत ही आशा की किरण बना है। अध्यात्मिक संगीत हृदय को उद्दात बनाता है। उपासना में संगीत अनुरंजन से देव साक्षात प्रकट होते हैं। विश्व के अध्यामिक गुरु रहे भारतवर्ष के चमत्कारी दिव्य अध्यात्मिक संगीत पर सभी की दृष्टी केन्द्रीत है। प्राचीन जम्बूद्वीप भरतखण्ड में वैदिक काल में आत्मदृष्टा ऋषियों ने अन्तर मुखी होकर ही सीधे ब्रह्म से वेद को श्रुति के रूप में प्राप्त किया। प्रथम ऋग्वेद–ज्ञानकाण्ड में देव स्तुतियों के मन्त्रों से साक्षात्कार होता है। मानवशास्त्रीय अध्ययन से पता चलता है कि यूनान, सुमेरिया, असीरिया, हित्ति, मित्तानी, पर्थिया, माया, इंका, ईरान से साईबेरिया, उत्तरीध्रुव, चीन, कम्बदेश, श्यामदेश, मलाया से भारतवर्ष तक स्वर विज्ञान की ध्वनि में समानता मिलती है। बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सनातन धर्म के मन्त्रों, स्तोत्रों, स्तुतियों आदि में स्वर के उच्चारण अनुरंजन, आरोह, अवरोह का बहुत महत्व है।

"भारतीय अध्यात्मिक चिन्तन आस्था एवं विश्वास पर आधारित है, वहीं पश्चिम उसे विज्ञान की कसौटी पर परखना चाहता है।" आर्ष ग्रन्थों में "मन्त्रं चित्तं, चित्तं मन्त्र" लिखा है। यानी मन्त्र ही चित्त है और चित्त मंत्र है। मंत्र का अर्थ मन को संकट, समस्या से मुक्ति त्राण दिलवाना है। अध्यात्मिक संगीत के मन्त्र, स्तोत्र, स्तुति, अथर्वशीर्ष, देवकवच, ईश्वर सहस्त्रनाम, सहस्त्रनाममाला, गायत्री, देवीसप्तशती, अष्टोतरशतनाम, दारूणसप्तक, देव हृदय, शान्ति स्तोत्र, रुद्राभिषेक रुद्री,भजन, संकीर्तन, भक्ति काव्य, बौद्ध मन्त्र, जैन मन्त्र, शाबर मन्त्र आदि का पाठ अथवा श्रवण सकारात्क विधायिकी ऊर्जा शक्ति का प्रवाह लाता है। उपासना में मन्त्र के निरन्तर जप से सकारात्मक शक्ति केन्द्रित होती है।

गन्धर्व

एकाक्षरनामकोश संग्रह, श्रीवीरशरभसालुव तन्त्रम में मातृका के देवता और मातृकार्णतव तन्त्र आदि में अक्षरमाला की दिव्य शक्ति और देवताओं के रहस्य का वर्णन है। उदाहरण के लिए भारतवर्ष से मिस्र तक प्रत्यक्ष देव सूर्य का बीजाक्षर एक ही है। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार तपस्वी ऋषियों ने वर्षों की साधना के बाद आकाश में (अन्तःकरण, हृदय) अक्षर ब्रह्म का साक्षात दर्शन किया। जिसे एकाक्षरनामकोश संग्रह में स्पष्ट गया है। जम्बूद्वीप में ही केवल ऋषियों ने 39 लाख वर्ष पूर्व अक्षर की शक्ति और ध्वनि विज्ञान को सिद्ध किया। सम्यक ध्यान को संध्या का स्वरूप दिया। ऋषियों ने साधना के दौरान अक्षरोंवाले मंन्त्रों के स्वरों को भी निश्चित किया। जिसके अनुसार तीव्र, मध्यम और मन्द्र स्वर में मन्त्र के अक्षरों के उच्चारण की व्यवस्था की। अर्थात अनुरंजन की शक्ति के द्वारा देवत्व प्राप्त किया।

ऋषियों–मनीषियों की स्पष्ट मान्यता रही कि ''मन्त्र आदि के पाठ से पहले उसका अर्थ जानना आवश्यक है। मन्त्र के अर्थ समझकर जप से उसकी शक्ति अधिक जाग्रत होती है।'' इसके अलावा मन्त्र का शुद्ध और निर्धारित स्वरों में जप करना भी अनिवार्य शर्त है। उदाहरण के लिए महर्षि वाल्मीकि के नौ घण्टे की सुन्दरकाण्ड का सस्वर पाठ हो। अध्येताओं ने स्पष्ट रूप से गायन की अनुमति नहीं दी है। दूसरे, ''अशुद्ध पाठ से अर्थ का अनर्थ होना टाला नहीं जा सकता है।'' दक्षिण में तिरूपति देवालय में श्रीवरुण यज्ञ से अभूतपूर्व वर्षा का विवरण पूर्व प्रधानमंत्री के पूर्व सूचना सलाहकार श्री पी.वी. रामाकृष्ण प्रसाद ने अपनी पुस्तक में किया है। वेद से लेकर तन्त्र शास्त्र में स्तुतियों को विधान शास्त्रीय रूप दिया। ''वैदिक ग्रन्थों के अनुसार अध्यात्मिक संगीत से सकारात्मक ऊर्जा का प्रचण्ड कम्पन उत्पन्न होकर चमत्कारिक कार्य करता है।'' यह समझा जाता है कि देवभूमि हिमालय के कलाप क्षेत्र में अट्ठाईसवाँ वैवस्त मनु का निवास है। हम इस बहस में नहीं जाना चाहते कि यह मान्यता क्या है? देश में मन्त्रों से लेकर सहस्त्रनामों की दिव्यशक्ति में आस्थावानों की बहुसंख्या है।

श्रीशाबर मन्त्रों की शक्ति के बारे में वैदिक ग्रन्थों से लेकर गोस्वामी तुलसीदास की रामचरित मानस में उल्लेख मिलता है। नाथ सम्प्रदाय के सिद्धों के श्रीशाबर मन्त्रों का जादू जग जाहिर है। लेकिन श्रीशाबर मन्त्रों का अर्थ खोजना आकाश कुसुम तोड़ने के समान है। वैदिक मन्त्रों के अपने अर्थ हैं। इसीकारण वेदों के ही समय लोक में ब्राह्मी, पाली और प्राकृत भाषा लोक में प्रिय होकर प्रचलन में रही। बौद्ध धर्म दर्शन के मूल ग्रन्थ पाली और जैन धर्म दर्शन के प्राकृत में हैं। भारतीय आर्ष ग्रन्थों के चमत्कारिक दिव्य मन्त्रों को तिब्बत की भोटिया में गोपनीय रखा गया। यह अवश्य है कि देश, काल, परिस्थिति के अनुसार मन्त्रों का स्वरूप बदलता गया। ''भारतीय मनीषा में साफ तौर पर कहा गया कि काल की दिशा केवल ज्ञानी ही घुमा सकते हैं। ज्ञानी ही काल पर सवार होते हैं।''

संध्योपासना में स्तुति से पहले विश्व, राष्ट्र की पूर्ण जानकारी देने का प्रचलन रहा। भारतीय भक्ति उपासना भक्त को दूसरे भाव लोक में जाती है। भक्ति में संकीर्तन, भजन आदि आन्तरिक निराशा, हीनभावना, गहरे मनोवसाद को निकाल फैंकते हैं। "वर्तमान औद्योगिक क्रान्ति के चौथे चरण में चौतरफा मानसिक तनाव, अवसाद में संगीत भावातीत समाधि और आन्तरिक चेतना के प्रस्फुरण में सक्षम है।" उल्लेखनीय है कि विश्व में सर्वप्रथम भारतवर्ष में सूर्य विज्ञान, गणित की गणना अपने शिखर पर पहुँची। सूर्य विज्ञानविद ऋषियों ने सभी ग्रहों, नक्षत्रों का सटीक वर्णन लाखों–हजारों वर्ष पूर्व किया। जिसे ईसा बाद पश्चिम ने वैज्ञानिक शोध में सही पाया। इन ग्रहों की स्तुतियों के मन्त्रों से वैज्ञानिक चकित हैं। वैज्ञानिक शोध से रहस्योद्घाटन हुआ कि हजारों वर्ष पहले पाठ किए मन्त्र आदि ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं। उन्हे पुनः सुने जाने के प्रयास जारी हैं। योगीराज रुद्र ने श्रीगीता में अक्षर को ही ब्रह्म और स्व के भाव में लौटने को अध्यात्म कहा। आदिशंकराचार्य ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद के ज्ञान के प्रसार के लिए पीठों की स्थापना की।

आज देश में संस्कृत एवं स्वय विज्ञान की सही जानकारी नहीं होने से मन्त्रों से स्तुतियों को लेकर संशय की स्थिति पैदा हुई है। हमें अपनी जड़ों की और लौटते हुए अध्यात्मिक संगीत के पुनर्जागरण की आवश्यकता है। यह स्मरण रहे कि अध्यात्मिक संगीत के पाठ, जप के साथ उसके अर्थ और व्याख्या भाष्य की जानकारी होना मूलभूत शर्त है। इसी उद्देश्य में देशभर में अनेक स्थानों पर टुकड़े टुकड़ों में निस्वार्थी ऋषिवत लगे हैं। परन्तु ये प्रयास अध्यात्मिक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के सूत्रधार नहीं बन पाये हैं। यह बहुत ही आनन्ददायक है कि इन अध्यात्मिक ग्रन्थों के अलावा मन्त्रों, स्तुतियों, अष्टोतरशतनामों, स्तोत्रों, सहस्त्रनामों, सहस्त्रनामावली, अष्टकों, रक्षा स्तोत्रों, स्तवों, चालीसाओं, अथर्वशीर्षों, खड़कमाला स्तोत्रों, पंचदशियों, सप्तशती, रक्षाकवचों, पंचकम, सूक्तों, सौन्दर्य लहरी–आनन्दलहरी, विविध देव स्तोत्रों, प्रकीर्ण स्तोत्रों, वेद ऋचा पाठों, शाबर मन्त्रों, भजनों, भक्ति काव्यों, संकीर्तनों, जैन मन्त्र, बौद्ध मन्त्र आदि के विशुद्ध पाठकर्त्ता आज भी उपलब्ध हैं। उनके वैदिक स्वर सम्मत पाठ को आम जन, विशेषकर 21 से 50 वर्ष के करोड़ों

युवाओं तक पहुंचाने के भागीरथी उद्देश्य से अध्यात्मिक ग्रन्थ एवं संगीत सौंपान का आयोजन किया जाना चाहिये। ताकि युवॉ पीढ़ी का अध्यात्मिक ग्रन्थों एवं संगीत के दिव्य आनन्द से साक्षात्कार हो। हमारी दृढ़ मान्यता है कि अध्यात्मिक संगीत विशुद्ध भारत का विचार है। भारतीय जन की आत्मा बसती है। आओं, हम साथ मिलकर दिव्य अध्यात्मिक ग्रन्थों एवं संगीत के भारतीय विचार के जनसेवक बनें।

अध्यात्म ग्रन्थ और संगीत

भारतीय अध्यात्म का ग्रन्थ एवं संगीत से अंतरंग सम्बन्ध है। "अध्यात्म सूक्ष्म अन्तः चेतना का विषय है। संगीत इसी चेतना को संवेदित करता है।" वैदिक सूक्त भी गेय हैं, संगीतमय हैं। सामवेद संगीत प्रधान है। वेदानां सामवेदोऽस्मिक कहकर संगीत के महत्व को प्रदर्शित किया गया है। अध्यात्म में प्रणव साधना, चक्र साधना, योग साधना, उपासना, अराधना भी अनुरणन, लयात्मकता, स्वर साधना, कम्पन, संवेदन का विशिष्ट महत्व है। संगीत भी मूलरूप से स्वर साधना पर आश्रित है। संगीत से प्राण चेतना, अध्यात्मिक चैतना एवं चित् तत्त्व से सम्बन्ध बनाया जाता है। सहजयोग भी अध्यात्मिकता का सहज मार्ग है।

संगीत से स्थावर जंगम प्रकृति में व्याप्त सूक्ष्म चेतना सक्रिय एवं जाग्रत होती है। इस लक्ष्य तथ्य को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकारा है। मानवीय चेतना तो विशेष रूप से संगीत के माध्यम से ही सबसे अधिक उद्‌बुद्ध होती है। संगीत के माध्यम से सहज रूप से कुण्डलिनी का जागरण एवं समाधि प्राप्त हो जाती है। संगीत से अन्तर्जगत में अन्तर्मुखी होकर ब्रह्म तत्त्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए स्वामी हरिदास, संगीत सम्राट तानसेन, श्री अमीर खुसरो, मीराबाई और दक्षिण से लेकर काश्मीर, अरुणाचल से गुजरात तक संगीत आचार्यों, भक्तों ने गीत, पद, स्तोत्र आदि के गायन को अध्यात्मिकता का अंग कहा। विभिन्न राग

रागनियों की संरचना भी विशुद्ध अध्यात्म की दृष्टि से की गई हैं। सम्पूर्ण शास्त्रीय संगीत साधना का आधार अध्यात्मिकता है।

हमारी स्पष्ट मान्यता है कि अध्यात्मिक संगीत सही मायने में अक्षरोपासना है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "अक्षर ही ब्रह्म है और अध्यात्म है।" स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ है। गीता में कहा गया है : अक्षरं परमं ब्रह्म। यही अक्षरोपासना परा विद्या है। हम अध्यात्म के स्वरूप को विविध रूप में विवेचित कर सकते हैं। इसीलिए कहा गया हैः समत्वं योग उच्यते। हमारा प्रयास यह है कि अध्यात्मिक संगीत की उपादेयता पर शोध किया जाए। इसका दिव्य आनन्द भारतीय प्राप्त करें। दूसरे शब्दों में अध्यात्मिक कसौटी पर अध्यात्मिक संगीत की उपादेयता को व्यावहारिक स्तर पर प्रस्तुत किया जा सके। इस प्रयास के द्वारा अध्यात्मिक संगीत की उपादेयता को रेखांकित किया जा सकेगा। यह भी प्रदर्शित होगा कि अक्षर ब्रह्म के स्वर की चमत्कारिक दिव्य शक्ति कितनी क्या है? अध्यात्मिक ग्रन्थ एवं संगीत पुनर्जागरण पहला कदम है।

भारतीय विचार : जम्बूद्वीप

भारतवर्ष के अध्यात्मिक ग्रन्थ विश्व की सांस्कृतिक धरोहर है। अध्यात्म का उद्देश्य व्यक्तित्त्व के नैतिक विकास से है। प्राचीन काल में देश में भौतिक एवं अध्यात्मिक उन्नति चरम शिखर पर रही। अध्यात्म में उपासना और नैतिकता दोनों ही एक दूसरे की पूरक रही। देश में वैदिक युग से नाद ब्रह्म के स्फोटवाद के अहम् को स्वीकारा गया। वैदिक काल में अक्षर ब्रह्म स्वर के दिव्य देवों की शक्ति की व्याख्या की गई। ऋग्वेद के अनुसरण में प्राचीन इतिहास के ग्रन्थों रामायण एवं महाभारत में अक्षर को ही परम ब्रह्म कहा गया। इसी के आधार पर

अध्यात्मिक ग्रन्थों के मन्त्रों, स्तुतियों, अष्टकों, अष्टोत्तर शतनामों, पंचदशियों, सप्तशती, अथर्वशीर्षों, सूक्तों, रक्षास्तोत्रों, प्रकीर्ण स्तोत्रों, सौन्दर्यलहरी–आनन्दलहरी–शिवानन्द लहरी, वैदिक ऋचाओं, जैन मन्त्र, बौद्ध मन्त्र, शाबर मंत्रों, भक्ति काव्यों, कीर्तन, भजन संकीर्तन, बौद्ध, जैन पारसी, सिख, ईसाई, सूफी आदि के चमत्कारिक प्रभाव का रहस्यलोक है।

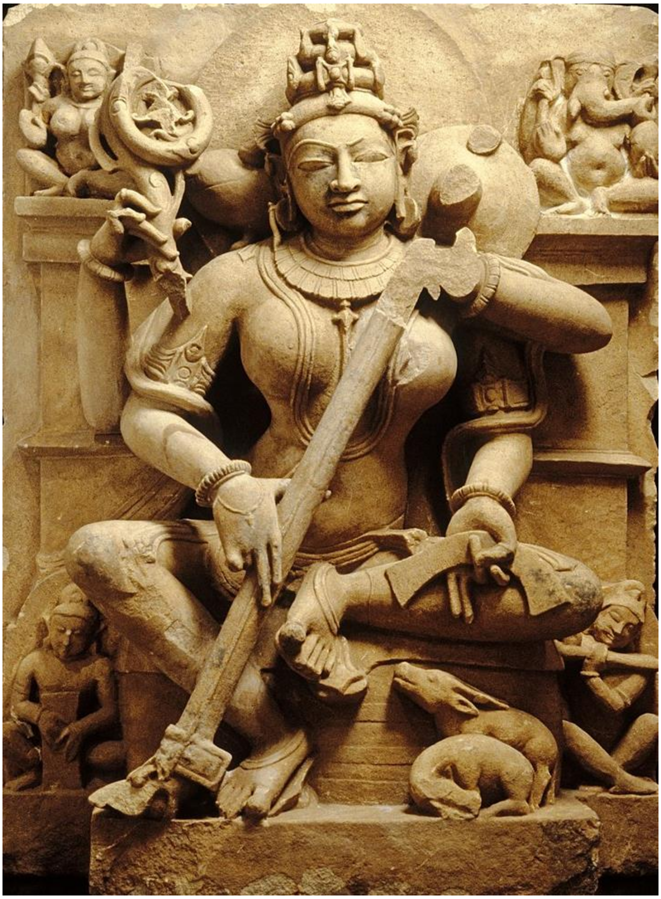

हमारी दृढ़ मान्यता है कि वर्तमान में वैश्विक महासंकट से उत्पन्न आत्मघाति निराशा, मानसिक अवसाद, मानसिक विक्षोभ से एकमात्र अध्यात्मिक ग्रन्थों में वर्णित ज्ञान ही मुक्ति दिलवाने की दिव्य

शक्तिरखता है। यह दुःख और चिन्ता का विषय है कि अध्यात्मिक ग्रन्थों के विशुद्ध नियमानुसार पाठ करनेवाले निरन्तर कम हो रहे हैं। यह यक्षप्रश्न है कि भारतीय विचार वैदिक एवं श्रमण परम्परा के ऋषियों की सांस्कृतिक धरोहर को कैसे सुरक्षित रखा जाए? विश्व के अध्यात्मिक गुरु भारत का अध्यात्मिक संगीत स्वर की अलौकिक महाशक्तियों का अनन्त भण्डार है।

प्रकाशकों के सूचीपत्रों का राष्ट्रीय रजिस्टर

श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज शोध सन्दर्भ के लिए आर्ष ग्रन्थ श्रुति–वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, संहिता, नीति, उपनिषद एवं स्मृति–पुराण, इतिहासः रामायण, जय संहिता, भारत संहिता, गीता और तन्त्र एकत्र करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अनेक प्रकाशकों के सूचीपत्रों में बहुत से ग्रन्थ या तो उपलब्ध नहीं थे अथवा काल के ग्रास बन चुके थे। देशभर के संस्कृत, भारतीय भाषाओं के अध्यात्मिक धार्मिक प्रकाशकों से पुस्तक मंगवाना कभी–कभी आसमान के तारे तोड़ने के समान था। आर्ष ग्रन्थ मंगवाने से पहले पुस्तक के शीर्षक से विषयवस्तु की जानकारी नही के बराबर मिलने से भी नई समस्या उत्पन्न होती रही। केन्द्रीय राजधानी दिल्ली तक में सभी प्रकाशकों के सूचीपत्र उपलब्ध नहीं है। ऐसे में प्रदेशों की राजधानियों एवं जिला मुख्ययालयों में प्रमाणिक अध्यात्मिक धार्मिक ग्रन्थों के सूचीपत्र कहाँ मिलेंगे? क्षमा करें! ऑनलाईन इण्टरनेट से भी प्रमुख आर्ष ग्रन्थ नहीं मिले।

हमारी दृढ़ मान्यता है कि विश्व के अध्यात्मिक गुरु भारत की अध्यात्मिक सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा समय की मांग है। इसी उद्देश्य से देशभर के अध्यात्मिक धार्मिक प्रकाशकों (लगभग 262) को लगातार पत्र भेजकर राष्ट्रीय रजिस्टर के लिए सूचीपत्र मांगे गए। देश के प्रमुख 600 जिलों

के दण्डनायक जिलाधीश, पुलिस कप्तान, जिला बार एसोसियेशन से जिलों से प्रकाशित आर्ष ग्रन्थों की जानकारी में सहयोग मांगा गया। सभी प्रदेशों–संघीय क्षेत्रों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायधीश, मुख्य सचिव, देवस्थान सचिव, कला–संस्कृति सचिव आदि से पत्र भेजकर सहयोग की अपेक्षा की। इसके अलावा देश के 285 विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों, शिक्षक संघों, छात्र संघों को भी पत्र भेजा गया। केन्द्रीय सरकार के विभागों–मंत्रालयों को पत्र भेजकर सहयोग की आकांक्षा की गई। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में 7500 पत्र भेजे गए।

हमारा प्रयास यह भी रहा कि देश में अनुपलब्ध अथवा दशकों से प्रकाशनाधीन दुर्लभ आर्ष ग्रन्थों का विवरण भी सूचीपत्र में सम्मिलित हो। शोध अन्वेषण अनुसंधान से इन दुर्लभ ग्रन्थों की अमूल्य कृति प्राप्त करने का जतन भी जारी है। हमारी स्पष्ट मान्यता है कि इन दुर्लभ आर्ष रचनाओं की अध्यात्म की दिव्यधारा का आनन्द रसास्वादन विश्वभर के अध्यात्म प्रेमी कर सकें और अध्यात्मिक आनन्द के भावातीत लोक में स्वच्छन्द विचरण करें।

शोध अनुसंधान प्रक्रिया से निम्न अध्यात्मिक धार्मिक ब्रह्मज्ञान प्रकाशकों के सूचीपत्र राष्ट्रीय सूचीपत्र रजिस्टर के अंग बने।

<u>महासूची पत्र में सम्मिलित प्रकाशकों में प्रमुख निम्न है</u> :

1. स्वाध्याय मण्डल, पारडी
2. वैदिक समाशोधन मण्डल, पूणे
3. आनन्द आश्रम, पूणे
4. भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूणे
5. राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान, जोधपुर
6. अरविन्द आश्रम संस्थान, पुदुच्चेरी
7. थियोसोफिकल सोसायटी हिन्दी प्रकाशन, वाराणसी
8. दा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता
9. तिरूपति देवस्थान, तिरूपति
10. श्रीअरविन्द कपाली शास्त्री वैदिक संस्कृति शोध संस्थान, बंगलुरू

11. श्रीकृष्ण जन्मभूमि सेवा संस्थान, मथुरा
12. नाग प्रकाशन, दिल्ली
13. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
14. चौखम्बा संस्कृत प्रकाशन, दिल्ली/वाराणसी
15. वैदिक वांगमय प्रकाशन, प्रयाग
16. कल्याण मन्दिर प्रकाशन, इलाहबाद
17. अमर स्वामी प्रकाशन, दिल्ली
18. अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कोलकात्ता
19. विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली
20. सेन्ट्रल चिन्मय मिशन प्रकाशन
21. हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहबाद
22. उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ
23. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
24. होप प्रकाशन, दिल्ली, गुडगांव
25. जनगणना विभाग, जयपुर
26. जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
27. हंसा प्रकाशन, जयपुर
28. नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी
29. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहबाद
30. श्रीपीताम्बरा संस्कृत परिषद, दतिया
31. मुंशीलाल मनोहरलाल, दिल्ली
32. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
33. ओशो प्रकाशन
34. मेघ प्रकाशन, दिल्ली
35. डायमण्ड बुक्स, दिल्ली
36. लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
37. आदित्य प्रकाशन, दिल्ली
38. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
39. ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट (एमएस यूनविर्सिटी), बडोदरा
40. श्रीगोरखनाथ मन्दिर प्रकाशन, गोरखपुर
41. श्री शंकराचार्य शारदापीठ, द्वारका

42. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी
43. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
44. भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ
45. तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ
46. हिन्दी प्रचारक संस्थान प्रा.लि., वाराणसी
47. भारतीय विद्या भवन, मुम्बई
48. वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई–थाणे
49. निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई
50. आर्कियोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, दिल्ली
51. बिहार स्कूल ऑफ योग, मुंगेर
52. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली
53. संस्कृति संस्थान, बरेली
54. लिटरेरी सर्किल, जयपुर
55. इन्द्र प्रकाशन, भोपाल
56. सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
57. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
58. किताबघर, दिल्ली
59. साहित्य शोध संस्थान, दिल्ली (श्री रविन्द्र सेठ)
60. रामलाल कपूर ट्रस्ट, हरियाणा
61. न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली
62. युग निर्माण योजना, मथुरा
63. श्री सरस्वती सदन, दिल्ली (श्रीसत्यकेतु विद्यालंकार)
64. इण्डियन प्रेस
65. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली
66. आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर
67. शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
68. श्रीवल्लभाचार्य ट्रस्ट प्रकाशन, माण्डवी, कच्छ
69. देवत्त वेदान्त फाउण्डेशन, बंगलूरू
70. जम्मू काश्मीर संस्कृति भाषा विभाग, श्रीनगर
71. श्री रामतीर्थ प्रकाशन, दिल्ली
72. ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

73. भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली–वाराणसी
74. हिन्दी साहित्य सदन, दिल्ली (श्री गुरुदत्त)
75. भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
76. राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन
77. वाणीविलास प्रेस, श्रीरंगम
78. भारत धर्म महामण्डल
79. भारती भण्डार, इलाहबाद
80. जानकी प्रकाशन, पटना
81. कोरनेशन प्रेस
82. विद्याश्रीन्यास
83. यदुवंशन्यास
84. वास्तु वांगमय प्रकाशन

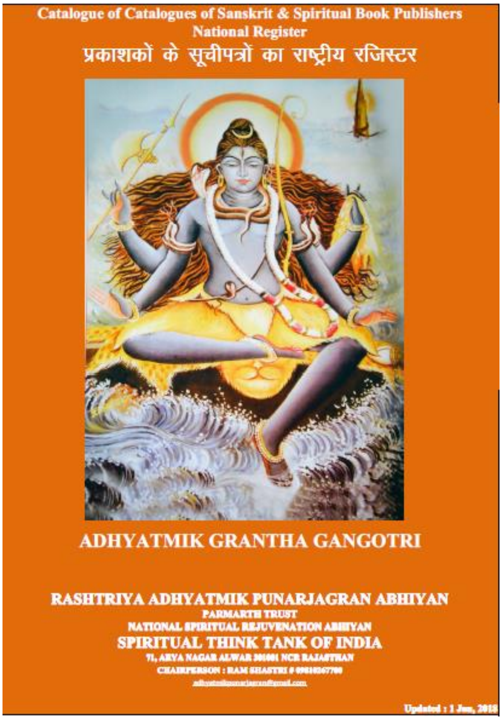

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

आर्षग्रन्थ पाण्डुलिपि

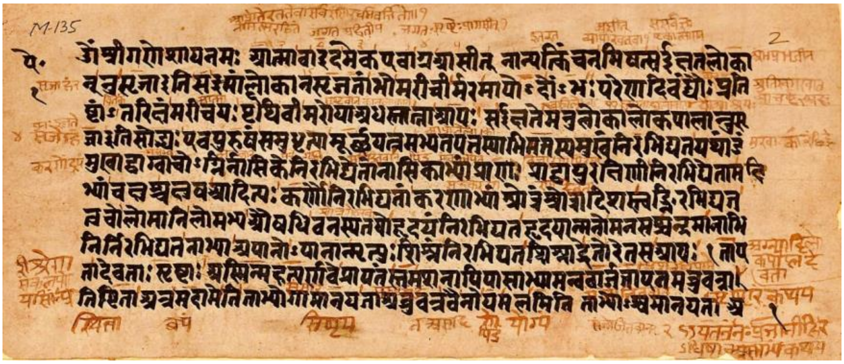

भारतीय मनीषा की धरोहर को तक्षशिला विश्वविद्यालय (2500 वर्ष प्राचीन) (वर्तमान में पाकिस्तान में) पुस्तकालय और नालन्दा विश्वविद्यालय पुस्ताकालय को अग्नि में स्वाहा करके नष्ट करने का प्रयास किया गया। वर्तमान में अनेक भारतीय आर्ष ग्रन्थों की अमूल्य पाण्डुलिपियाँ एवं मूल कृतियाँ यूरोप आदि के संग्रहालयों में मिलती हैं। विगत ढाई हजार वर्षों में असंख्य पाण्डुलिपियाँ अवैध रूप से विदेशों में जाती रही। यह सौभाग्य का विषय है कि श्रृति स्मृति परम्परा के कारण नव पाण्डुलिपियों का सृजन हुआ। यह बात अलग है कि आज भी अनगिनत विषयों की पाण्डुलिपियाँ या तो विदेशों में हैं या विलुप्त हैं।

पाण्डुलिपियों के संग्रह की दिशा में दा थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया, आनन्द आश्रम, दा एशियाटिक सोसायटी, देशभर के संग्रहालयों, जयपुर के पूर्व राजा के पोथीखाने, सीतामऊ के राजकुमार रघुवीर सिंह, स्वाध्याय मण्डल, भण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीटयूट, डॉ. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान, अजमेर शरीफ के दीवान, श्रीलक्ष्मणजू महाराज आश्रम, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, गवर्नमेन्ट ओरियन्टल मेनुसक्रिप्ट लाइब्रेरी (मद्रास चेन्नई), जैन

विश्व भारती (लाडनू), परमार्थ न्यास, वृन्दावन शोध संस्थान, संजय स्मृति संस्थान, सरस्वती शोध संस्थान, दतिया शोध संस्थान, आदि ने अभूतपूर्व कार्य किया। श्री जिनविजय मुनि ने सन 1950 में राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान की स्थापना के साथ देशभर में पाण्डुलिपि संग्रह का महाभियान छेड़ा। वर्तमान में राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान में लगभग सवा लाख पाण्डुलिपियाँ संग्रहित हैं। श्रीजिनविजय मुनि को हम नमन करते हैं।

यहाँ यह लिखना प्रासंगिक होगा कि देश भर के मन्दिरों, प्राचीन इस्लामी–ईसाई पूजागृहों, प्राचीन जैन स्थानकों, प्राचीन बौद्ध मठों, पारसी पूजाघरों आदि में लाखों की संख्या में पाण्डुलिपियाँ अभी भी सुरक्षित हैं। उत्तरी पश्चिमी भारत, दक्षिणी भारत, पूरबी भारत, मध्य भारत, उत्तरी भारत के सुदूर गांवों के मठों और हवेलियों में पाण्डुलिपियों के खजाने हैं। इन खजानों में दुर्लभ ग्रन्थ हैं। समस्या यह है कि इनको एकत्रित करने के लिए मुनि जिनविजय सरीखा समर्पित निःस्पृह निःस्वार्थ धर्मयोद्धा की आवश्यकता है। निरन्तर प्रयास से ही इन पाण्डुलिपियों का सार्वजनिक किया जा सकता है और उनके अध्यात्म रस का आनन्द सभी को मिल सकेगा।

यह सबसे अहम् है कि चर्चित आर्ष ग्रन्थ जैसे श्री निम्बाकादित्याचार्य के पिता श्री अरुण ऋषि की अरुण संहिता (संग्रहकर्ता श्री हवेलीराम जोशी), अरुण स्मृति, सुदर्शन संहिता, सुदर्शन स्मृति, सुदर्शन चक्र (ज्योतिष), सौर संहिता, अगस्त्यमुनि की अगस्त्य संहिता, यंत्र सर्वस्व आदि सहित असंख्य पाण्डुलितियों का प्रकाशन शेष है। यह स्मरण रहे कि पाण्डुलिपियों का पठन एवं लेखन एक विशेषज्ञता की दक्षता है। इसमें तत्कालीन प्रचलित संस्कृत, प्राकृत, शारदा लिपि, ब्राह्मी लिपि, अरबी, पारसी, बांगला, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, असमी, मैथली, मराठी, गुजराती, काश्मीरी आदि का ज्ञान भी आवश्यक है। विद्वानों के अनुसार दो हजार, एक हजार अथवा पांच सौ वर्ष पुरानी संस्कृत वर्तमान से भिन्न है। स्पष्ट है कि लिपिबद्ध करनेवाला संस्कृत एवं पाण्डुलिपिविद् हों। हम हमें उपलब्ध पाण्डुलिपियों के सूचीपत्र दे रहे हैं। प्रकारान्तर में प्राप्त सूची पत्रों को सम्मिलित करने की परियोजना है।

देश भर में कुल पाण्डुलिपि विवरण

क्र.सं.	पाण्डुलिपि संस्थान	पाण्डुलिपि सं०
1.	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	1,40,000
2.	राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान, जोधपुर	1,16,123
3.	गवर्नमेंट ओरियन्टल मेनुस्क्रिप्ट लाईब्रेरी, चेन्नई	72,620
4.	टीएसएसएम, तंजावूर	47,625
5.	अडयार लाईब्रेरी एण्ड रिसर्च सेन्टर, चेन्नई	40,000
6.	ओडिशा स्टेट म्यूजियम, भुवनेश्वर	37,000
7.	एशियाटिक सोसायटी, कोलकात्ता	32,000
8.	आन्ध्रप्रदेश ओरियन्टल मुख्य लाईब्रेरी	23,115
9.	खुदाबख्श ओरियन्टल पब्लिक लाईब्रेरी, पटना	20,060
10.	सिंधिया ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, उज्जैन	18,695
11.	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़	18,395
12.	विश्वभारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन	15,354
13.	रामपुर रजा लाईब्रेरी, रामपुर	15,000
14.	राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर	14,000
15.	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत वि० वि०, दरभंगा	13,000
16.	कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता	13,000
17.	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	12,000
18.	सरकारी पाण्डुलिपी पुस्तकालय, इलाहबाद	11,000
19.	बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय	10,500
20.	सफदरजंग संग्रहालय, हैदराबाद	1,000
21.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह	10,000
22.	उस्मानिया विश्वविद्यालय पुस्तकालय, हैदराबाद	6,428
23.	शिवाजी विश्वविद्यालय पुस्तकालय, कोल्हापुर	5673
24.	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय	5,500
25.	पूणे विश्वविद्यालय	4,416
26.	पटना विश्वविद्यालय	3,700
27.	तमिल विश्वविद्यालय, तंजावूर	3,365
28.	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता	3,258

29.	गुवाहाटी विश्वविद्यालय	3,248
30.	उत्कल विश्वविद्यालय	3,053
31.	आन्ध्र विश्वविद्यालय पुस्तकालय	3,000
32.	संस्कृत अकादमी, उस्मानिया विश्वविद्यालय	3,000
33.	राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, हैदराबाद	17,000
34.	वृन्दावन शोध संस्थान	10,000
35.	अजमेर शरीफ दीवान मौलाना जैनुअल अबादीन	10,000
36.	संजय शर्मा स्मृति पाण्डुलिपि केन्द्र, जयपुर	1,15,000
37.	तिरूमला तिरूपति देवस्थान	....
38.	आनन्द आश्रम	14,000

दिव्य संगीतः अध्यात्मिक धार्मिक महासंगीत रजिस्टर

भारतीय मंत्र–तन्त्र–यन्त्र सृष्टि के विज्ञान और अक्षर ब्रह्म की शक्ति का स्रोत है। अक्षर की दिव्य चमत्कारी शक्ति का गूढ़ रहस्य मन्त्रद्रष्टा ऋषियों–मुनियों ने परत दर परत खोला है। शास्ता रुद्र ने अक्षर को परम ब्रह्म की संज्ञा दी है। मंत्र का अनुरणन, आरोह, अवरोह सबसे महत्वपूर्ण है। प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में मंत्र के अक्षर पर उसके स्वर का स्पष्ट निर्देश है। यह भी दिशानिर्देश है कि स्तोत्र, मूल मंत्र आदि का पाठ किस प्रकार से करें? अमुक स्तोत्र का पाठ दिन में कितनी बार करें? श्री रुद्रपाठ, श्रीशिव महिम्न स्तोत्र, श्रीलंकेश्वर रावणकृत शिवताण्डव स्तोत्र, श्रीमहासरस्वती स्तोत्र, श्री देवी सप्तशती, श्रीललिता सहस्त्रनाम, श्रीलक्ष्मी सहस्त्रनाम, श्रीबाला स्तोत्र, श्रीशिव सहस्त्रनाम, श्रीविष्णु सहस्त्रनाम, श्री सुदर्शन सहस्त्रनाम, श्री आदित्य हृदय, श्रीआदित्य शतनाम, श्रीशरभस्तोत्र, देवी प्रत्यंगिरा स्तोत्र, श्रीदेवी शूलनी स्तोत्र, श्रीमहिषासुरमर्दनी स्तोत्र, श्रीमहागणपति स्तोत्र, श्रीरामायण का संस्कृत सुन्दरकाण्ड, श्रीनवग्रह स्तोत्र आदि के पाठ में स्वर महत्वपूर्ण है।

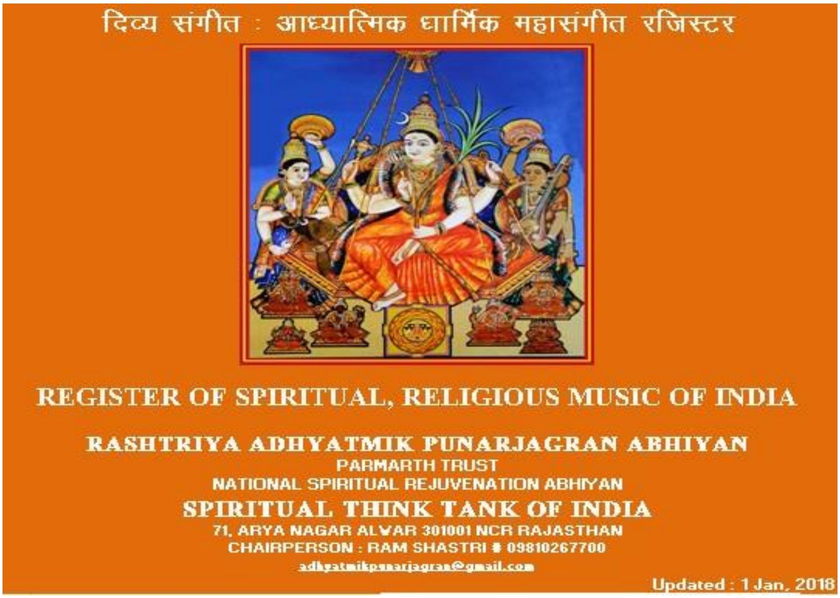

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

वर्तमान में यह समस्या है कि इन मंत्र–स्तोत्र आदि के स्वरों के अनुसार संस्कृत पाठ करनेवालों का नितान्त अभाव है। आगमों के अनुसार मंत्र–स्तोत्र के गलत पाठ से हानि हो सकती है। यह भी निर्देश है कि मंत्र स्तोत्र पाठ से पूर्व उसका अर्थ भी समझ लें। श्री रुद्रताण्डव स्तोत्र समभाव के भावातीत लोक में ले जाने वाला है। श्रीरुद्रपाठ–श्री आदित्य हृदय सृष्टि के रहस्य को प्रकट करते हैं। मूलतः मंत्र मन को संकटों से त्राण यानी मुक्ति दिलाकर सकारात्मक ऊर्जा का प्रचण्ड प्रवाह करने की दिव्य शक्ति सम्पन्न हैं। इसमें मात्र आवश्यकता मंत्र–स्तोत्र आदि को जाग्रत कर आराध्य देव की शक्ति युक्त होना है।

मंत्र शक्ति का शक्तिपात ही सबसे प्रमुख है। कलिकाल में यदि संस्कृत का विशुद्ध आरोह अवरोह पाठ नहीं कर सकते तो शुद्ध पाठ श्रवण सुनना भी विकल्प है। मंत्र की दिव्य शक्तियों पर संशय करते हुए आयुर्विज्ञानविदों (डाक्टर) ने अस्पताल में रोगियों के बीच मंत्र ध्वनि कर

उसके प्रभाव का आंकलन किया। इसीक्रम में कारपोरेट क्षेत्र कार्यस्थल पर मन्द–मन्द स्वर में मंत्रपाठ चला। दोनों के परिणाम आश्चर्यजनक रूप से अभूतपूर्व सकारात्मक रहे।

यह स्मरण रहे कि महाकवि कालिदास, महाकवि मयूर या श्रीसाम्ब अथवा अट्ठारहवीं शती में बीदर के महामात्य श्री भास्कर राय श्रीसूर्य की आराधना से असाध्य रोग से मुक्त हुए। बीसवीं शती में स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस और ज्योतिषपीठ बदरीनाथ के जगदगुरु शंकराचार्य श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती महाराज अदृश्य दिव्य शिक्षा केन्द्र ज्ञानगंज में दीक्षित थे। स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस ने मृत चिड़िया को पुनर्जीवित करने का चमत्कार ''श्री सूर्यविज्ञान'' से दिखाया।

वर्षों के शास्त्रार्थ के बाद पश्चिमी जगत ने स्वीकारा कि अपौरुषेय (ब्रह्म रचित) वेद के मंत्र अनन्त काल से ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। इससे प्रमाणित होता है कि अक्षर ब्रह्म कभी नष्ट नहीं होता। अपौरुषेय वेद प्रलय के बाद अथवा मनवन्तर समापन के उपरान्त भी विद्यमान रहेंगे। वर्तमान में आवश्यकता है कि मंत्र की शक्ति के वैज्ञानिक स्वरूप से साक्षात्कार कर देवभाव में लीन हों। मंत्र आदि को दिव्य आनन्द वर्षा का रस लें।

श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज आर्ष ग्रन्थशोध सन्दर्भ

विगत तीन चार दशकों से श्री राम शास्त्री ''ब्रह्म सत्य जगद् मिथ्या'' के विभिन्न ग्रन्थों के रसिक पाठक रहे। प्रारम्भ में ऋषि मुनियों की साधना स्थली में महर्षि पराशर की ''राक्षसनाशक यज्ञस्थली'' के परिसर में अध्यात्मिक ग्रन्थागार एवं साधना स्थली स्थापना में लगे। कुछ हजार पुस्तक एकत्र कर रखी गई। अप्रत्याशित रूप से श्रीपाराशर पीठ के

पीठाधीश्वर श्री जगमोहन दास की निर्मम हत्या से कार्य योजना अधर बीच बन्द हुई। ग्रन्थ भी गायब हुए।

अलवर में पिताश्री पण्डित गौरीशंकर शास्त्री और माता श्रीमती शान्ति शास्त्री 71 आर्य नगर बंगले में वेद सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ करना चाहते थे। श्रीमती शान्ति शास्त्री के जीवनकाल में 22 जुलाई 2011 को श्रीनीलकण्ठ ज्ञानगंज का श्रीगणेश किया गया (निधन 2 जून, 2012)। श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज में शुरूवात में मात्र लगभग 800 ग्रन्थ रहे एवं वर्तमान में लगभग 7000 हैं। सन् 2011 से 2017 में देशभर के प्रकाशकों से श्रुतिस्मृति के प्रमाणिक अधिकारिक दुर्लभ ग्रन्थों के एकत्रीकरण का महायज्ञ शुरू हुआ।

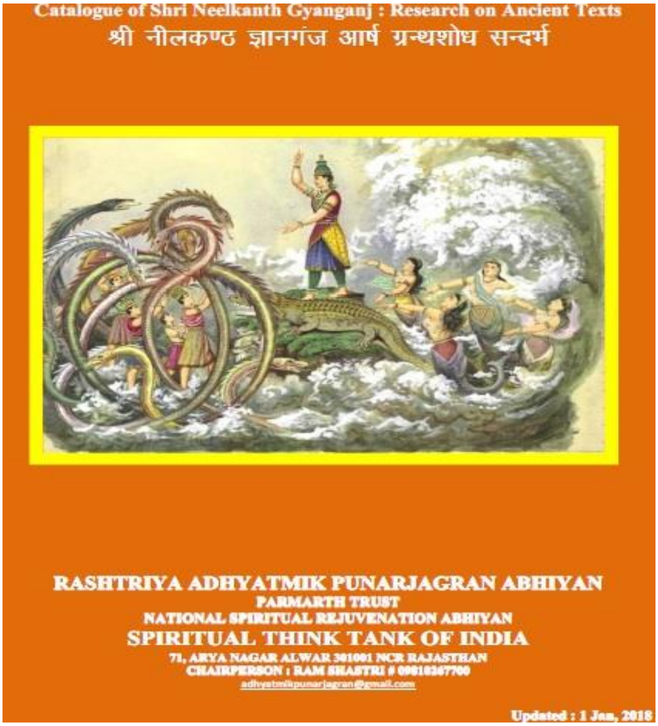

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

यह सबसे विकट समस्या थी कि प्रमुख अध्यात्मिक प्रकाशकों के कुछ प्रमुख ग्रन्थ अनुपलब्ध या वर्तमान में प्रकाशित नहीं हो रहे थे, जैसे –

1. स्वाध्याय मण्डल, पारडी
2. अरविन्द आश्रम
3. निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई
4. वाणी विलास प्रेस, श्रीरंगम्
5. भण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूणे
6. राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान
7. श्रीकृष्ण जन्मभूमि सेवा संस्थान, मथुरा
8. मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, दिल्ली
9. ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट, बडौदा
10. हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
11. हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहबाद
12. इण्डियन प्रेस, प्रयाग
13. नवलकिशोर प्रेस
14. प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली
15. राष्ट्रीय जनगणना, जयपुर
16. तिरूमला तिरूपति
17. डॉ. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
18. दा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता
19. दा थियोसोफिकल सोसायटी, चेन्नई
20. आनन्द आश्रम संस्थान, पूणे
21. पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी
22. भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली
23. श्री सरस्वती सदन प्रकाशन, दिल्ली
24. आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
25. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन
26. श्री पीताम्बरा संस्कृत परिषद, दतिया
27. हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
28. भारत धर्म महामण्डल, वाराणसी
29. विद्याश्रीन्यास, गोरखपुर

30. कोरनेशन प्रेस, बंगलुरू
31. वास्तु वांगमय प्रकाशन, प्रयाग
32. आदित्य बुक सर्विस, दिल्ली
33. यदुवंश न्यास, फैजाबाद आदि।

यह विकट समस्या रही कि इनको विलुप्त कृतियों को कैसे प्राप्त किया जाए ? जिससे इनका अमृतपान किया जा सके। मूल प्रकाशन तक भी असमर्थता ही व्यक्त कर रहे थे। यह देवकृपा रही कि सैंकड़ों की संख्या में दुर्लभ आर्ष ग्रन्थ प्राप्त हुए। चार वर्षों में आर्ष ग्रन्थ एवं अन्यों की संख्या लगभग 4800 हुई। ये सभी ग्रन्थ अध्यात्म प्रेमियों–जिज्ञासुओं के लिए श्रीनीलकण्ठ ज्ञानगंज, 71 आर्यनगर, अलवर राजस्थान में उपलब्ध हैं।

चमत्कारिक
दिव्य यन्त्र–चित्र महासागर

ओमिति ब्रह्म। औमितीदं सर्वम्
(यह सब औंकार रूप ही है।)
ईशानः सर्वविद्यानां ईश्वरः सर्वभूतानाम्
एकं तन्त्रं समाश्रित्य सम्यक् कर्म कृते तथा।
सर्वं तेन कृतं राम तच्च श्री गुरुमार्गतः!!7!!
(त्रिपुरा रहस्य चर्याखण्डः चतुर्थ अध्याय)
मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

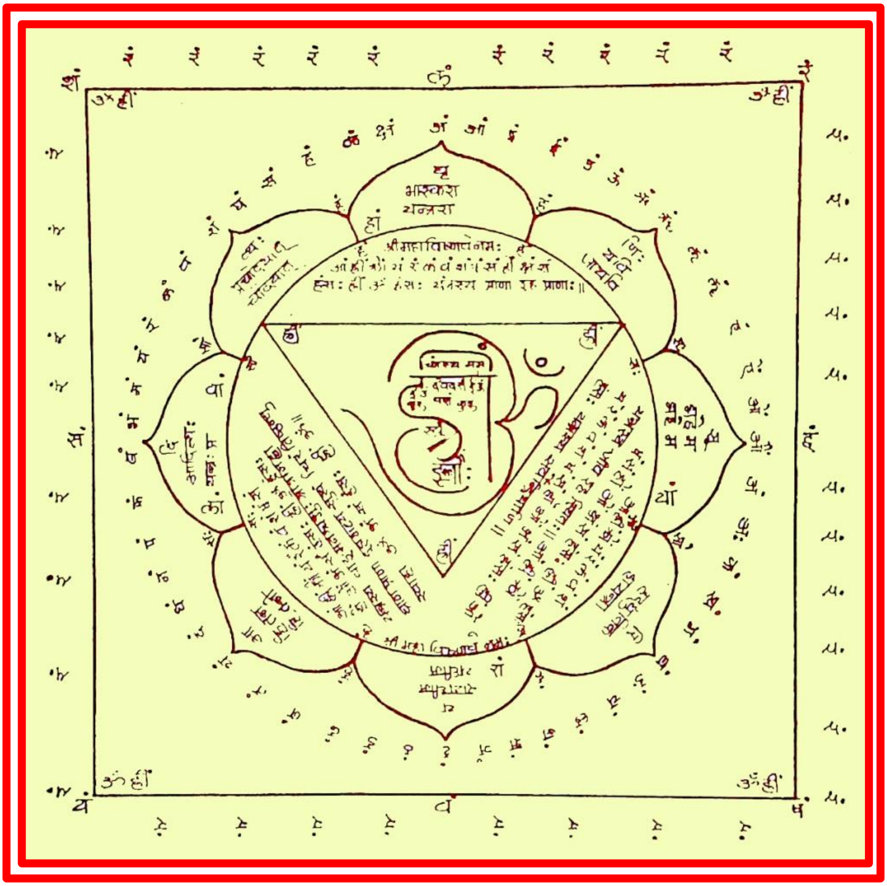

सूर्य यंत्र

निगम से आगम तक निराकार परमेश्वर को साकार रूप दिया गया। ज्ञान को मूर्तरूप अक्षर ब्रह्म ने दिया। अक्षर मूलतः सृष्टि के प्रतीक बिन्दु और रेखा का विस्तार है। लोक से ही संस्कारित होकर वेद की रचना हुई। प्रतीक–दिव्य यन्त्र और प्रतिमा के माध्यम से आराध्य को चैतन्य कर देव स्वरूप होने की प्रक्रिया है। दिव्य यन्त्र और चित्रों में चमत्कारी दैविक शक्ति का अनन्त भण्डार होता है। इससे शक्तिपात के लिए यन्त्र चित्र को जाग्रत करने की आवश्यकता है। इसकी चर्चा पृथक विषय है।

इसीक्रम में स्पष्ट करना चाहेंगे कि भगवान रुद्र का अंश रुद्राक्ष धारण करने की अनुष्ठानिक प्रक्रिया है, अन्यथा रुद्राक्ष वांछित फल नहीं देगा।

यही रत्न पहनने पर भी चरितार्थ होता है। यह आवश्यक है कि घर अथवा प्रतिष्ठान में यन्त्र अथवा चित्र स्थापित करने से पहले उसके सन्दर्भ में रहस्यमय चर्या की जानकारी प्राप्त करें।

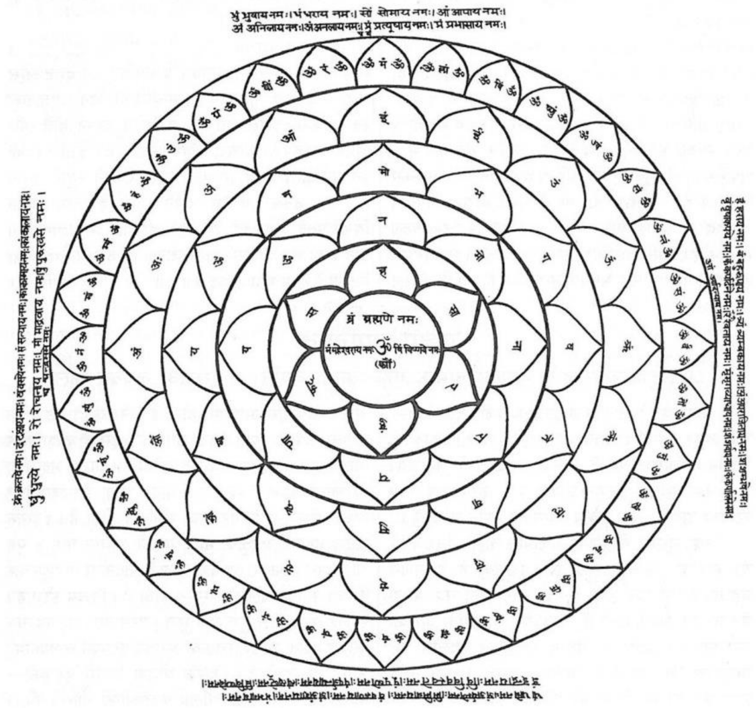

सुदर्शन चक्र

वर्तमान में सभी यन्त्र–चित्र सभी की प्रकृति के अनुरूप अनुकूल अथवा प्रतिकूल होते हैं। यह ध्यान रहे कि दिव्य यन्त्र–चित्र स्थापना से पहले ज्ञानी से दिशानिर्देश लें।

भागतीत ध्यानयोग
अध्यात्मिक परिसंवाद–समाधान–सत्संग

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन।
य प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।

———

पद्मं विश्वं करे स्थितम्।।
नमामि वेदत्रयलोचनं तम्।।

———

धर्मस्तु द्रवरूपेण ब्रह्मणा निर्मितः पुरा।
तद्वै गंगेति विख्याता श्रृणु स्तोत्रं वसुन्धरे।।
ऋग्वेद : 4.58.3

———

अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति। (निरूक्त)

———

ऋचोअक्षरे परमे व्योवन यस्मिन देवा अधिविश्व नीषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा किरिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

न्यास प्रकाशन : देशव्यापी उपलब्धता
राष्ट्रीय संस्कृत–वैदिक विद्वान् कोष

विश्व एवं देश में अध्यात्मिक पुरोत्थान (पुनर्जागरण) के उद्देश्य से ऋग्वेद के मूलभूत तत्त्व पर शोध संग्रह प्रकाशित किये गये हैं।

पँच महाभूत शृंखला

पृथिवीविद्या
वरुणविद्या
सूर्यविद्या
वायुविद्या
आकाशविद्या

वैदिक देवता

रुद्रविद्या
विष्णुविद्या

अन्तिममहातीर्थ

कैलास महारहस्यम अंग्रेजी,
कैलाश महारहस्यम हिन्दी

वैदिक चिकित्सा

वेद ओषधि कल्पतरु
वेद वर्णित रोग एवं ओषधियाँ

डिजिटल ग्रन्थ

अंशुबोधिनी शास्त्र (पुनरोद्धार)
सूर्य किरण की ऊर्जा शक्ति

शुक्ल यजुर्वेद रुद्र पाठ

शुक्ल यजुर्वेद के रुद्र सूक्त में मात्र 66 मन्त्र है, उनकी व्याख्या आदि।

श्री सिद्धि

ऋग्वेद के खिलसूक्तों में मन्त्रों का श्री सूक्त है। श्री सूक्त की अध्यात्मपरक व्याख्या।

सूर्योपासना

इसमें सूर्य के दुलर्भ स्तोत्र, सहस्रनाम, मन्त्रादि हैं।

अध्यात्मिक पुनर्जागरण

इसमें अध्यात्मिक पुनर्जागरण रेखांकित।

संस्कृत प्रकाशकों का महासूचीपत्र

इसमें देश के प्रमुख संस्कृत–अध्यात्मिक प्रकाशकों के लगभग 23,000 ग्रन्थों के नाम, लेखक, प्रकाशक, प्रकाशनवर्ष एवं मूल्य है।

दिव्य संगीत सूचीपत्र

इसमें संस्कृत आदि के स्तोत्र, स्तुति, शतनाम, सहस्रनाम आदि के निर्माताओं की सूचना है।

नीलकण्ठ ज्ञानगंज–आर्ष ग्रन्थ

इस ग्रन्थागार की 7000 पुस्तकों का विषयवार सूची पत्र है।

विचार संग्रह

सन् 1956 में पण्डित गौरीशंकर शास्त्री इसका संशोधन कर प्रकाशित करवाया। यह अध्यात्मिक धार्मिक कोश है।

संस्कृति उज्जैयिनी

इसमें सन् 1955 में महादेवी हरसिद्धि एवं महाकाल की नगरी का प्राचीन इतिहास–संस्कृति का वर्णन है।

सविता देवा

वैदिक सविता देवता पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के श्री भगवद्दत्त की अद्भुत कृति।

ऋग्वेद भाष्य

आचार्य टी. वी. कपाली शास्त्री का ऋग्वेद भाष्य प्रमाणिक माना गया है।

लघु शरभ विद्या

ये सभी इन्टरनेट आर्कावाइव पर उपलब्ध है।

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

आगामी प्रकाशन

यज्ञ विद्या
स्वस्ति विद्या
कल्पवृक्ष विद्या
सूर्यगीता
अरुणस्मृति
वेद परिचय
(सभी डिजिटल मात्र)

प्रकाशन उपलब्धता

प्रकाशित ग्रन्थ निम्न प्रतिष्ठित ग्रन्थागारों में उपलब्ध हैं।

1. संसद पुस्तकालय, दिल्ली
2. प्रधानमंत्री कार्यालय, दिल्ली
3. संयुक्त रक्षा सेवा पुस्तकालय, दिल्ली
4. नौसेना, दिल्ली
5. प्रधानमंत्री स्मृति ग्रन्थागार, दिल्ली
6. इण्डिया इंटरनेशनल सेन्टर, दिल्ली
7. इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर कल्चरल हेरिटेज, दिल्ली
8. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, दिल्ली
9. आयुष मन्त्रालय, दिल्ली
10. कांग्रेस संसदीय दल अध्यक्ष, दिल्ली
11. लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी
12. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
13. नालन्दा विश्वविद्यालय, राजगीर
14. सुदाबख्श पुस्तकालय, पटना
15. केरला स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी, तिरुअनन्तपुरम
16. संस्कृत भाषा प्रचारिणी सभा, नागपुर
17. संस्कृत न्यास, नासिक
18. भारत इतिहास शोधन मण्डल, पुणे
19. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारिणी सभा, चेन्नई
20. पाणिनी वैदिक संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन
21. शंकराचार्य मठ, श्रृंगेरी
22. शंकराचार्य मठ कुदाली, शिमोगा
23. श्री चन्द्रशेखर सरस्वती संस्कृत विश्वविद्यालय, कांचीपुरम्
24. श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल
25. ला.ब.शा. संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
26. राष्ट्रीय केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
27. उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
28. जैन विश्व भारती, लाडनू
29. के. के. हंदिक संस्कृत महाविद्यालय, गुआहाटी
30. विवेकानन्द केन्द्र, रामेश्वरम्

31. इण्डियन काउन्सिल ऑफ वर्ल्ड एफेयर्स, दिल्ली
32. अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्, वाराणसी
33. जंगमवाडी मठ, वाराणसी
34. दक्षिणामूर्ति मठ, वाराणसी
35. काशी विद्वत् परिषद्, काशी
36. हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
37. कल्याण, वाराणसी
38. प्रत्यकीर्ति शोध संस्थान, वाराणसी
39. अयोध्या नरेश पुस्तकालय, अयोध्या
40. जयकिशन ग्रन्थागार, उत्तरपाडा
41. तिब्बत हाउस, दिल्ली
42. अरविन्द कपाली शास्त्री वैदिक शोध संस्थान, बंगलुरु
43. मोरेश्वर घैसाजी वेद विद्यालय
44. प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद्, दिल्ली
45. महाराणा मेवाड़ संग्रहालय, उदयपुर
46. महाराजा गज सिंह पुस्तकालय संग्रहालय, जोधपुर
47. भादरिया पुस्तकालय, भादरिया, जैसलमेर (9 लाख पुस्तकें)
48. राधास्वामी सत्संग, डेरा बाबा जैमल सिंह
49. कामख्यापीठ, कामख्या
50. कालकाजी पीठ, दिल्ली
51. अमेरिकन लाईब्रेरी कांग्रेस, दिल्ली
52. वल्लभाचार्य पीठ, मोरवी
53. महाश्रद्धेय श्रीवत्स गोस्वामी, वृन्दावन
54. राजस्थान प्राच्यविद्या संस्थान, जोधपुर
55. भण्डारकर प्राच्यविद्या संस्थान, पुणे
56. आईएचसी, ग्रन्थागार, दिल्ली
57. दा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता
58. दा थियोसोफिकल सोसायटी, अडयार, चेन्नई
59. जमायत–ए–इस्लामी, दिल्ली
60. त्रिपुरसुन्दरी पीठ, त्रिपुरा
61. तारापीठ, पश्चिमी बंगाल
62. रघुवीर सिंह पुस्तकालय, सीतामऊ
63. आरएसएस मुख्यालय, नागपुर

64. महातीर्थ आश्रम, आनन्द
65. थल सेनाध्यक्ष पुस्तकालय
66. आनन्द आश्रम, पुणे
67. परमहंसी गंगा आश्रम आचार्य रविशंकर द्विवेदी, झोतेश्वर
68. ईशा फाउण्डेशन
69. स्वाध्याय मण्डल, पारडी
70. महेष योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी
71. आईआईएम, इन्दौर
72. आईआईटी, खडकपुर
73. राजभवन, जयपुर
74. राजभवन, रांची
75. पुष्कर मठ, पुष्कर
76. टाटा ट्रस्ट, मुम्बई
77. वीर शैव पुरोहित सभा, कर्नाटक
78. जर्मन कल्चरल सेन्टर, दिल्ली
79. इन्स्टीट्यूट ऑफ वैदिक स्टेडीज, बंगलुरु
80. प्रमुख दूतावास, पन्द्रह राष्ट्राध्यक्ष एवं महामहिम पोप लियो चौदहवां
81. समस्त संस्कृत विश्वविद्यालय
82. समस्त केन्द्रीय पुस्तकालय
83. दक्षिण भारत की हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि आदि।

राष्ट्रीय संस्कृत वैदिक विद्वान् कोष

हमने देश के प्रमुख संस्कृत वैदिक विद्वानों, अध्यात्मविदों धर्माचार्यों और संस्थानों की सूची तैयार की है। इसमें लगभग 500 सूची शामिल हैं। उत्तर–मध्य, पश्चिमी–भारत के सनातन धर्म के आश्रमों को भी चिन्हित किया गया है।

अध्यात्मिक आनन्दवर्षा

''राष्ट्रीय अध्यात्मिक पुनर्जागरण अभियान प्रेमभाव शुल्क में अध्यात्मिक ब्रह्मज्ञान धार्मिक दिव्य अमृत रस वर्षा के लिए समर्पित है। विश्वग्राम के सभी अध्यात्म अध्येताओं, चिन्तकों, मनीषियों, प्रेमियों से अध्यात्मिक प्रेम स्नेह ही मात्र स्वीकार है। यही मूलभूत कारण है कि भौतिक द्रव्य (धन) के सहयोग की विनम्रता के साथ अस्वीकार किया गया है। अध्यात्म की दिव्यशक्ति सभी संचालित करती है, वही इस भागीरथी कार्य को स्वयं सम्पन्न करेगी, जैसे वर्तमान तक किया। अतः इस दिव्य भावातीत आनन्द के प्रेमियों से सादर अनुरोध है कि अध्यात्मिक आनन्दवर्षा करें। यद्यपि दुर्लभ आर्ष ग्रन्थ सहर्ष स्वीकार हैं।'' कृपया राष्ट्रीय अध्यात्मिक पुनर्जागरण अभियान, श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज, 71 आर्यनगर, अलवर 301001 राजस्थान, भारत अथवा **adhayatmikpunarjagran@gmail.com** पर भेजें।

परमार्थ न्यास की विरासत : न्यास स्वरूप

देश की छोटी काशी में विश्व में चर्चित रहस्यमय दिव्य शक्ति सम्पन्न ज्ञानगंज इन्द्रभवन दीक्षितों के समान महाशक्तिवान जयपुरके तत्कालीन राजगुरु पण्डित श्री विद्यानाथ ओझा से संवादों में अध्यात्मिक पुनर्जागरण की परिकल्पना अध्यात्म रसिक श्री राम शास्त्री के मन में उत्पन्न हुई। कालचक्र ने राष्ट्रीय अध्यात्मिक पुनर्जागरण अभियान के रूप में परमार्थ न्यास का गठन तीन दशक बाद 11 जनवरी, 2017 को निश्चित किया।

अध्यात्मिक रसिक श्री राम शास्त्री परमब्रह्म की सद्प्रेरणा से परमार्थ न्यासकर्ता बने। इससे पूर्व सन् 2000 में श्री शास्त्री ने 1000 आर्ष ग्रन्थ महर्षि पराशर आश्रम में देकर शोध संदर्भ प्रारम्भ किया था। पर अचानक महर्षि पराशर आश्रम के महात्मा नहीं रहे। इसके अलावा श्री शास्त्री की 2500–3000 पोथियाँ चोरी हुई।

यह अभूतपूर्व अप्रत्याशित है कि विगत 8 वर्षों में अध्यात्मिक रसिक श्री राम शास्त्री ने परब्रह्म की कृपा के अपने समूचे संसाधनों स्त्रोतों को अध्यात्म ऋषियज्ञ की आहुति देकर आधारभूत ढ़ांचा खड़ा करने की व्यवस्था की। परमार्थ न्यास के प्रबन्धन्यासी कर्ता श्री राम शास्त्री की धर्मप्राण माताश्री श्रीमती शान्ति शास्त्री ने सन् 2010 में अपने निज बंगले–71 आर्य नगर, अलवर 30101 राजस्थान, भारत के आधे भाग में अध्यात्म गंगोत्री के लिए सहर्ष स्वीकृति दी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आर्य नगर अलवर शहर का सबसे अभिजात्य क्षेत्र है। सर्वप्रथम आर्ष ग्रन्थ शोध सन्दर्भ श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज एवं अध्यात्मिक पुनर्जागरण की आधारशिला के लिए भूतभावन धूर्जटी साम्ब सदाशिव महादेववागीश रुद्राभिषेक, रुद्रयज्ञ एवं शरभयज्ञ का आयोजन 22 जुलाई, 2011 को श्रीमती शान्ति शास्त्री की उपस्थिति में हुआ। प्रकारान्तर में सन 2011–2012 में इसी बंगले में श्रीनीलकण्ठ ज्ञानगंज प्रारम्भ हुआ। श्रीमती शान्ति शास्त्री की उपस्थिति में प्रारम्भ श्रीनीलकण्ठ ज्ञानगंज में प्रारम्भ में मात्र लगभग 650 ग्रन्थ एवं पाण्डुलिपियाँ रही और वर्तमान में सन 2017 के पूर्वार्द्ध में यह संख्या 4867 हुई (वर्तमान में 7000)। इनमें लगातार वृद्धि हो रही है। इन आर्ष ग्रन्थों में श्रुति–स्मृति एवं आगम निगम अर्थात वेद, ब्राह्मण, अरण्यक, अप्रकाशित–प्रकाशित उपनिषद, तन्त्र–मन्त्र–यन्त्र, स्मृति, संहिता, पुराण, रामायण, विभिन्न गीता, सूर्यसिद्धान्त, आयुर्वेद, भागवत, सनातन भागवत साहित्य, धर्मशास्त्र, धर्मकोश, संस्कृत साहित्य, विभिन्न कोश, धार्मिक कथानक, प्रमुख धर्मो के धर्मशास्त्र–ताओ, बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई, इस्लाम, सिख आदि सम्मिलित हैं।

यह बहुत ही विनम्रतापूर्वक कहना चाहेंगे कि दैविक शक्तियों के प्रताप से श्रीनीलकण्ठ ज्ञानगंज में देश विदेश में दुर्लभ लगभग 1500 से अधिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इसके लिए दैविक शक्तियों को नमन करते हैं।

हम यह रहस्योद्घाटन करना चाहते हैं : ''ज्ञानगंज हिमालय में पवित्र कैलास शाम्भाला के समीप स्थित अदृश्य अध्यात्मिक केन्द्र है।'' कैलास के घेरे में वेद अर्थात ब्रह्मविद्या की रचनाकाल 39 लाख वर्ष से आर्यों के आदिदेश ब्रह्मवर्त्त जम्बूद्वीप में चमत्कारिक द्विव्यशक्ति सम्पन्न वैदिक ऋृषि गोपनीय साधना दीक्षा आश्रम चला रहे हैं। बीसवीं शताब्दि में स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस, जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती आदि ज्ञानगंज में दीक्षित रहे। इसी पृष्ठभूमि में श्रीवागीश योगीश्वर एवं ज्ञानगंज के स्मरण में श्री नीलकण्ठ ज्ञानगंज नामकरण हुआ।

वायुदेवता

सविता देवता

सूर्य देवता

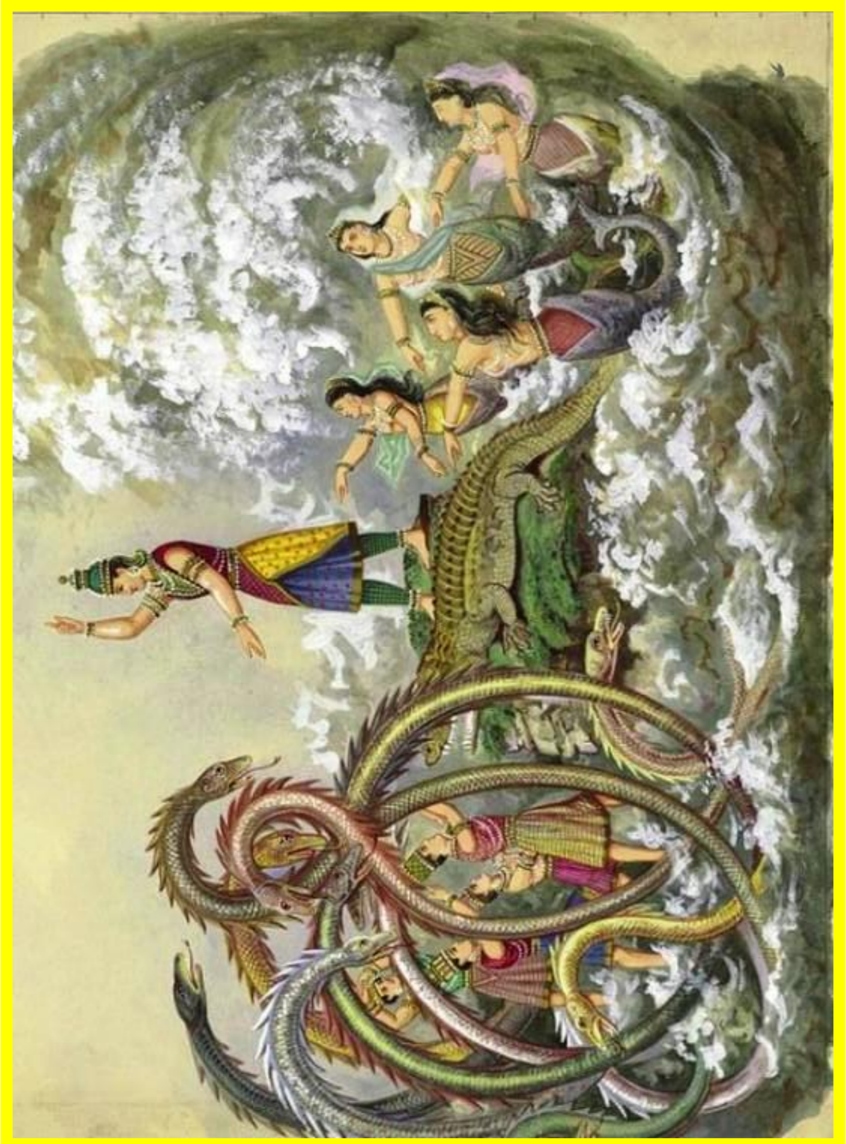

वरुण देवता

विष्णु देवता

इन्द्र और दुर्वासा

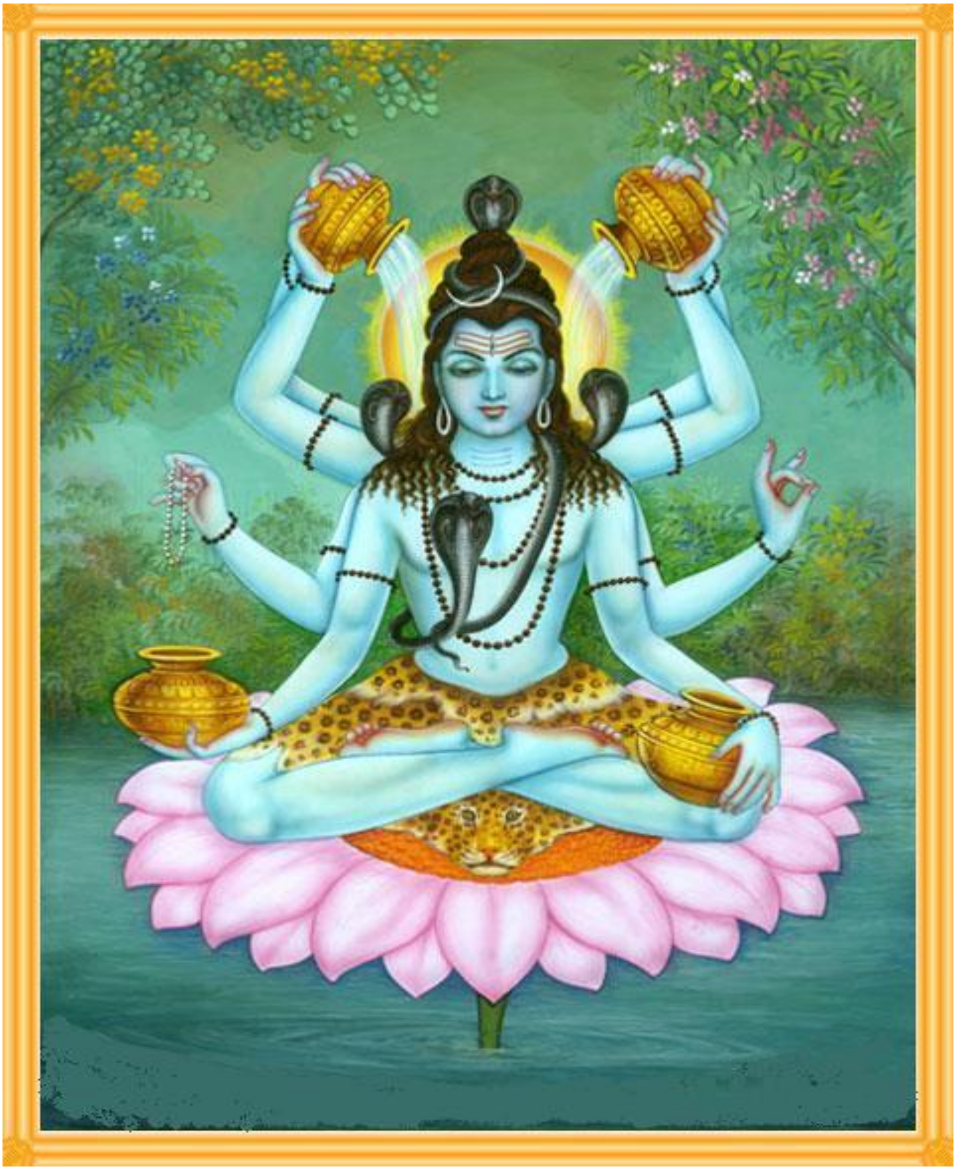

वैद्यनाथ रुद्र

वैदिक अम्बिका देवता

वैदिक अग्नि देवता

Spiritual Regeneration: Need of the Hour
Crying Need for Country’s Spiritual Rejuvenation

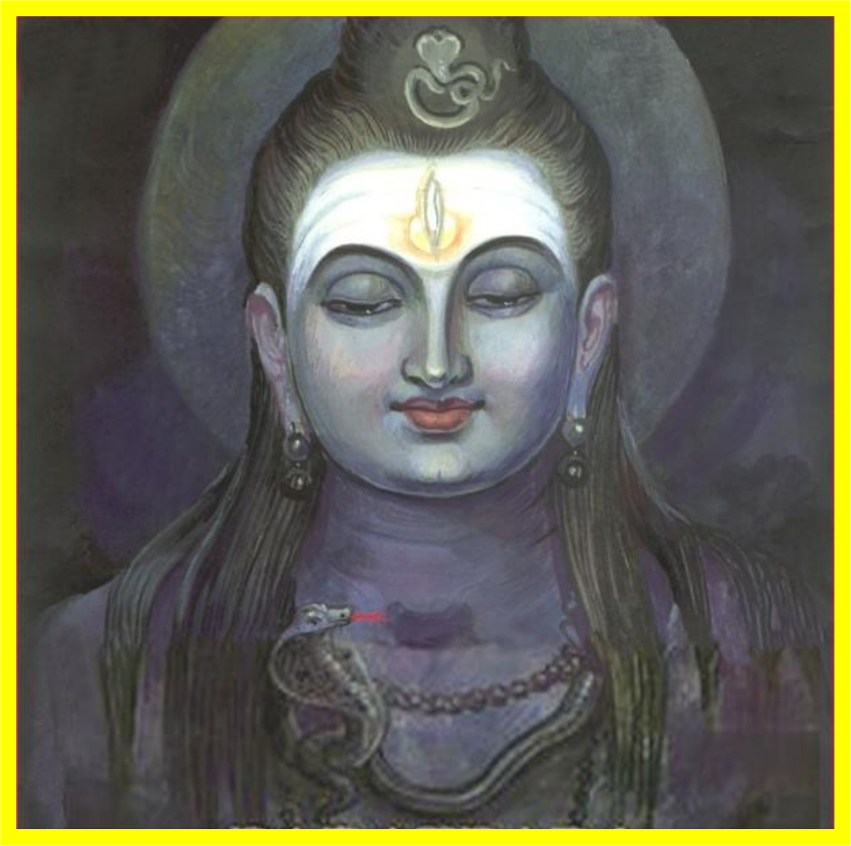

The spiritual and cultural rejuvenation of the country has become overdue. It has been happening at different intervals from the Vedic times.

Historically, "India has shown the light of knowledge and wisdom to the world." This knowledge got gradually destroyed due to decline

in State patronage and may be because of some conscious efforts by the Moghul and more vehemently by the British.

It is no secret, now, that all advanced nations have undertaken extensive research on ancient Indian texts. Most of the scientific inventions, over the years, we will find that they are based on postulates given by great Indian sages e.g. Dattatreya, Agustya, Yajnavalkya, Vashistha, Vishvamitra, Astavakra, Vedvyas, Aryabhatt, Bhaskaracharya, Kanad, Nagarjuna, Charak, Sushrut, Varahmihir, Patanjali, Bharadwaj, Kapil etc.

Many years ago, Lord Maculay and German scholar Max Mueller were among the first to take note of the golden era of spiritualism in India. Max Mueller wrote about 'what India teaches us'. It is necessary to understand the context of Indian spiritualism and culture. Culture implies a beautiful creation. "Foreign scholars have created a misconception about the term culture and spiritualism."

It has become necessary to present the divine voice of the Vedas in a new light in the 21st century. It will not do to claim that the Vedas had mentioned about planes attacking targets with deadly weapons. In the 19th and 20th centuries there was a strong wave to infuse new life in the teachings of the Vedas. Swami Dayanand took the revolutionary step of taking the Vedas to women and the lower castes. At a meeting in Mumbai, "he said that if what he says is wrong it should be rejected."

The 19th century revolutionary Swami Vivekanand raised the banner of Indian culture at a world religious conference in America. Indian religious and spiritual thinkers defined the term "Arya as meaning the best." It may be recalled that Swami DayanandSaraswati and Swami Vivekanand were at the forefront of the freedom movement in the 19th century.

3000 year old Rigved, Syria

In the 20th century, scholar Shri T.V. Kapali Sastri presented a new interpretation of the Rigveda. He surprised everyone by the contemporaneous frame in which he explained the intricacies and mysteries in the words, language and principles in the ancient Rigveda, as enshrined in the treatises of Acharya Sayan and Acharya Yasak. Acharya Yasak has acknowledged that he did not understand the meanings of certain difficult words used in the Vedas. In the Rigveda a word may refer to fame but at another place it may have a culinary connotation. Shri Kapali Sastri has tried to end many controversies about the Vedic texts by reinterpreting the meaning of certain words like 'Gau' (cow) and Saraswati.

Mahamahopadhyay Sri Sripad Damodar Satwelkar, Mahrishi Ravana, Acharya and some others followed the same tradition. The

mysteries about the Vedic gods of Agni, Vayu, Marut, light, Surya, Ashwini Kumar, Indra, Varun, Poosha etc have been lifted by Maharishi Arvind, MM Satwelkar, Acharya Bhaskar Rai and Shri Kapali Sastri, Pt. Bhagwad Dutt, Sh. Gurudutt, Sh. Rele etc. The Vedic mantras have been well explained in Brahmin treatises. The mystery world of the Vedas was confined to the intellectual world of the Rishis and Munis.

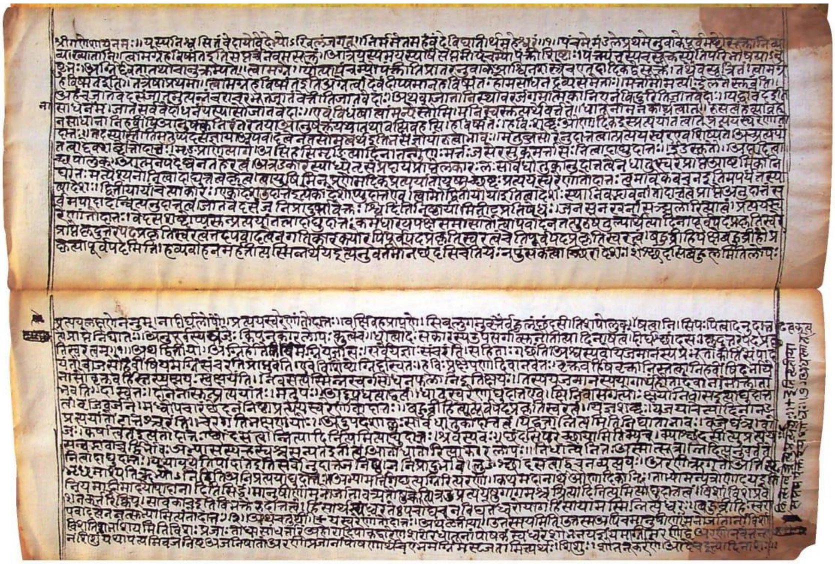

Folios from the *Rigvedapadapatha*, preserved at Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune

Upanishads followed the rejuvenation of the Vedas spirit. The more than 186 compilations of thoughts and memoires (Upanishad) of Rishis that form part of ancient Indian literature are also part of the exercise of religious rejuvenation. Its foundation was laid by the literary outpourings of the ancient Rishis. Rishi Yajnavalakya advises against taking 'sanyas' (renunciation), though many other sages do not agree with this view. The works of the ancient sages and Rishis needs to be scientifically studied. The magical power of AksharNaad is used in the recitation of mantras and religious prayers. The recitation of Sanskrit mantras in three different 'swaras' (tones) has been prescribed.

Gateway of Gyanganj

Gyanganj

In the 20th century, Gyanganj dikshit Paramhans Vishudhananad used to perform the miracle of reviving dead birds in Gyanganj, situated in the lap of the god's own Himalayas, with the help of the power of the Sun and mantras (See, Paul Briton's 'Search of Secret India'). With his power of concentration he was able to transport (teleport) himself hundreds of miles away to provide timely cure to the needy. Father C.W Leadbeater has predicted the day of divine visit in the Himalayas. How the semi-naked loin cloth wearing, ash-smeared Sadhus roam in the holy Kailash Mansarovar of Shasta Rudra! The Shabar mantra in common Hindi that conveys the Vedic mantras to the ordinary person has the same magical powers. During their time Adi Shankaracharya and Guru Gorakhnath sounded the bugle of religious rejuvenation and unified India. In all corners of India, East or West, North or South, Sanskrit is used for all prayers and religious invocations.

During the middle ages the saint poets rejuvenated religion with the Bhakti cult. These saints tried to uproot religious hypocrisy. In the last 300 years during the colonial British rule these saint poets fought against the British rule and many of them were martyred. The history of these martyred saint poets has never been written.

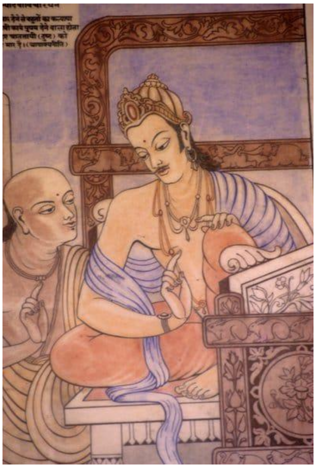

Kautalya & Chandragupta

We should take pride in the pre-Christ era's Kautalya Arthshastra by Acharya Vishnugupt Chanakya as a symbol of Indian intellectualism. Bankim Chandra Chatlopa-ddhay holds Yogiraj Shrikrishna as relevant to the present. Our cultural values demand that Dharma should guide our administration. Dharma has to be taken to mean justice.

The world has acknowledged the "Indian concept of Universal Brotherhood". Indian culture came under severe attack after Independence. The moral yardsticks of Indian culture were torn apart. From the Vedas to the Upanishadas, all are being neglected. It is unfortunate that the forgotten Indian practices and concepts are hailed loudly when they return to the country only after finding acceptance in the West. We do not value our inheritance.

Takshila Vishavidyalya, Bharatvarsh

Religious and cultural rejuvenation will not come about by merely talking loudly about the Vedas. It is the need of the hour to present in a contemporary form our religious and spiritual inheritance embodied in the Vedas and scriptures written 39,00,000 years ago.

The cultural research organizations have to take up this job. A religious-cultural rejuvenation programme has to start to unfold the mysteries of the Vedic culture. A new beginning has to be made to let the world know about the mysterious powers of the ancient Indian wisdom.

Shruti & Smiriti

Ved : Rigved

1,00,000 Richas

(39 lacs years ago)

Rigved : Gyan Khand

Shakhas 21

Available 3

Rigved Bhasyakar

Paramacharya Lankeshwar Ravan (Darshanaparak), Acharya Sayan,
Acharya T.V. Kapali Sastri,
Swami Dayanand Saraswati,
Acharya Sripad Damodar Satavlekar,
Acharya Bhagvaddatt etc.

Brahman : 1111

Available 19-20 only

Aaranyak : 1121

Available : 9

Upanishat : 1023

Available : 186

Rigved Kaal

Aryon Ka Adidesh - 39 lacs years ago

(Source : Aryon Ka Adidesh, Paschimi Asia Aur Rigved, Rigved Parichay etc.)

Shruti

Ved Tryee

Rigved : Gyan Khand

Yajurved : Karma Kand

Samved : Richa Paath

Brahmin Granth

Aaranyak

Upanishat

Upved : 4

Ayurved

Dhanurved

Gandharvaved

Arthved - Vishvakarmaved

(not included in Shrutis)

Vedang : 6

Shiksha

Vyakaran

Chhand

Nirukta

Jyotish

Kalpa

Darshan : 6

Mimansha

Sankhya

Yog

Vedant

Nyay

Vaisheshik

Sutra Grantha : 2262

Shauta

Shulba

Grihya

Dharma

Smriti : 20 Available

Dharmashastra

Yajnavalkya

Parasar

others

Puran-Uppuran

Puran : 18

Uppuran : 18

Itihas

Ramayan

Jai Samhita (8800 sloka) (out of print)

Bharat Samhita (25,000 sloka) (out of print)

Mahabharat (1,00,000 sloka)

200 Geetas (Available 70-90)

Nighantu-Nirukta

Vaidic Shabdakosh : 16

Available : 5

Authors : 15-16

Upmanyu, Galav, Shakapuni, Kathakya, Kashyap, Shakatayan, Taitiki, Gargya, Aonabhav, yasle etc.

Origional Veda Manuscripts

2300 Years ago : Takshashila Visvavidyalaya

(Stolan by Greeks etc.)

Now available : Western Museums

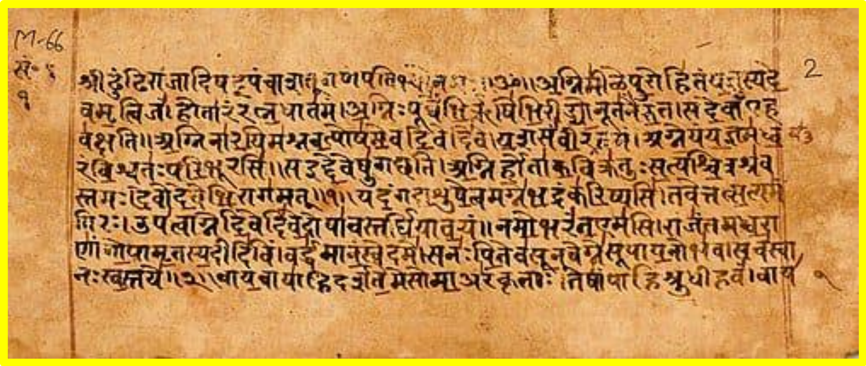

Indian Thought :
Magical, Divine, Spiritual Music & Books

The spiritual music & Books of India, once the spiritual Guru of the world, has once again drawn attention of the world. India has had a

long tradition of spiritually strong music that predates the Vedic era. The Rishi of the Vedic era with their divine power received the knowledge of the Vedas directly from Brahm. The compilation of the Vedas began with the songs of the gods. Studies have revealed that musical Vedas ties brought Greece, Egypt, Sumeria, Asyria, Hitti, Inca, Maya, Eurasia, Iran, China, Cambodia, Thailand, Malaysia and India closer to each other. It is very important to render the correct notes while reciting the mantras and religious chants in Buddhism, Jainism and the Sanatan Dharma.

"The Indian spiritual thought is based on faith and trust but the West wants to scrutinize it scientifically." The ancient sacred books equate the mind with the mantras. The purpose of the mantra is to relieve one of problems. The recitation of spiritual music in all its forms fills the body with energy. In meditation, the recitation of the mantras concentrates positive energy. They also reveal the secrets and mysteries of divine powers. India, Inca, Sumer, Asyria, Maya and Egypt share the seed letter for the Sun god. The ancient holy books have references about how after many years of meditation the sages were able to see Brahm in the skies in the form of letters. Thousands of years ago the sages of ancient India had proved the power of the letter and the science of sound. During their meditation, the Rishis of India had determined the notes in three octaves for singing the mantras.

The Rishi-Munis always believed that before reciting a mantra it is necessary to understand its meaning. It helps to make the power of the mantra more manifest. It has also been necessary to recite the mantra in pure prescribed tones. For example, Maharaishi Valmiki's SundarKand recitation should be absolutely tuneful lasting nine hours. Scholars have, however, not recommended its rendition in the form of pure song. Wrong recitation, on the other hand, renders the whole exercise meaningless. Shri P.V. Ramakrishna Prasad, Information Adviser of a former Prime Minister, has in his book

given a vivid description of the rain after Shri Varun Yajna was performed at the Tirupati Devalaya. From the Vedas to the Tantra Shastras, all have given a classical shape to the singing of hymns.

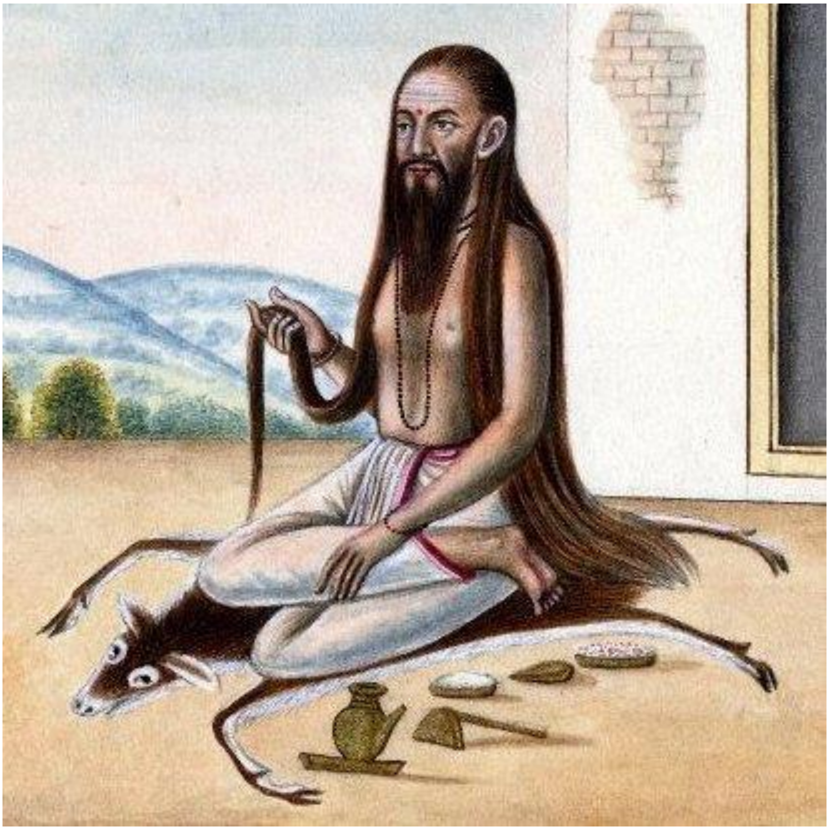

According to the Vedic texts, astonishing results are obtained after the intense vibrations generated by the spiritual music create positiv energy. It is believed that in the Hiamlayan abode of the gods lives the 28th Manu. We do not want to go into what this belief is about. There is no dearth of people in the country who believe in the power of the mantras and thousands of manifestations of god power.

The contemporary world is familiar with the amazing power of Shabar mantras. The magic of these mantras is known to the Naath

community but the correct interpretation of the mantras is nearly imposible. The words in the Vedic mantras have their importance because of which Brahmi, Pali and Prakrit lanuagues were popular. The religious philosophies of the Buddhists and Jains are written in Pali and Prakrit. The legacy of India's magical mantras is kept hidden by the Bhotias of Tibet. But it is true that with the passage of time and changing circumstances the character of the mantras has changed. Indian thought is very clear that only the knowledegeable can turn the tide of time. Knowledge alone rides over time.

3000 years old Rigved, Syria

ADHYATMIK AMRITUM :
Spiritual Music & Books

The spiritual and cultural rejuvenation of the country has become overdue. It has been happening at different intervals from the Vedic times.

The spiritual books & music of India, once the spiritual Guru of the world, has once again drawn attention of the world. The importance of the sound of Naad Brahma has been accepted from the Vedic age. The Vedic age described the godly power of the Akshar Brahma Swara, the voice of Brahm. In the Vakyapadiyan, Sphotvad, Sphotsiddhi & Shnadristi the word has been called the Supreme Brahm. All forms of mantras, religious recitations and prayers derive their mysterious powers on this basis.

The compilation of the Vedas began with the songs of the brahm. Studies have revealed that musical ties brought Maya, Inca, Parsian, Sumer, Asyria, Hitti, Mittani, Tibet, Greece, Iran, China, Cambodia, Thailand, Malaysia and India closer to each other. It is very important to render the correct notes while reciting the mantras and religious chants in Buddhism, Jainism and the Sanatan Dharma.

The industrial, urban and highly consumerist societies are presenting extremely complicated and complex world views leading to pathless and frivolous generations. We are again having to fall back upon the principles of Indian spiritualism, yoga and ayurveda for human well

being. Slowly, we are reaching a conclusion that modern science has little answers to human disease except for ineffective quick fixes.

The answers to all human woes are hidden in our ancient texts and it has now become imperative that we revisit our heritage that had been relegated to the background in the face of the concept of 'modern scientific temper'. Our tradition and heritage is no different from this concept, it only is more scientific.

Indian Vedic thought and spiritual music provide an escape from today's troubled world. There is a lack of people who can correctly read and recite spiritual and religious texts. To overcome this shortcoming a centre for research on Indian spiritual music and philosophy i.e. Spiritual Think Tank of India is being set up. This Centre shall encourage research and study of all kinds of religious and spiritual literature in print as well as audio-visual forms.

Catalogue of Publishers: National Register

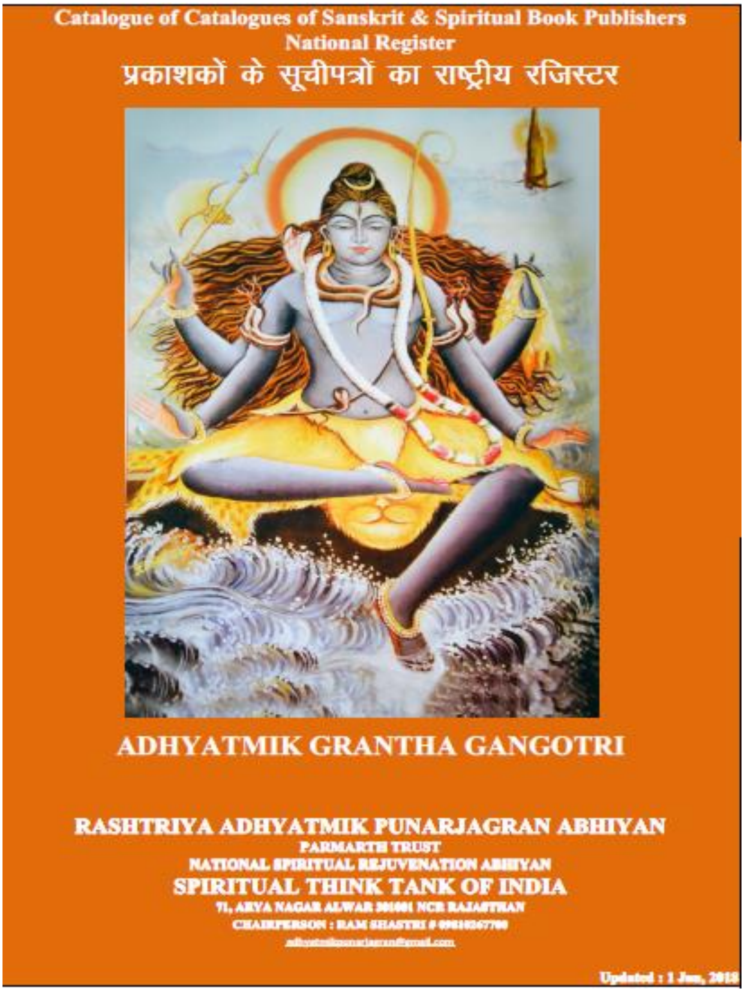

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

Many difficulties cropped up in gathering old texts for research at the Shri Neelkanth Gyanganj Centre. The most important thing is

that in the catalogue with the publishers either many of the texts were either not listed or were damaged by the ravages of time. It is like plucking stars from the sky to get books from the Sanskrit and Indian language publishers. Problems also arose because of inadequate information on the contents of the books from the titles.

In the national capital Delhi there is no complete list of the publishers. How can then we expect a complete list of spiritual and religious books in state capitals and district headquarters? Even on-line search on the internet did not help much in knowing about the availability of ancient texts and books on spiritualism.

"It is the call of the time to save and protect the spiritual and cultural heritage in India, the world leader in spiritualism." For this purpose, a request was sent to nearly 262 religious publishers in the country to prepare a comprehensive catalogue of ancient and invaluable religious and spiritual works. Requests were also sent to district magistrates, police chiefs and district bar associations for help in locating and discovering religious and spiritual literature. Letters were also addressed to all heads of the states in the country, chief ministers, chief justices of high courts, chief secretaries, Devasthan secretaries and secretaries of arts and culture departments in the states. In addition letters were also sent to the Sanskrit departments in 285 universities in the country, teachers associations, student unions as also various departments and ministries of the federal government.

It has been our effort that details of all relevant publications, rare as well as those still not published, be included in the proposed national catalogue. Efforts are continuing to obtain rare texts from research institutes. We firmly believe that our efforts will help all those in the world who believe in spiritualism.

BOOK PUBLISHERS LIST :

1. Swadhyay Mandal, Pardi
2. Vaidik Samshodhan Mandal, Pune
3. Anand Ashram, Pune
4. Bhandarkar Oriental Research Institute (BORI), Pune
5. Rajasthan Prachya Vidya Pratishthan, Jodhpur
   (Also known as Rajasthan Oriental Research Institute (RORI)), Jodhpur
6. Aurobindo Ashram, Pondicherry
7. Theosophical Society Hindi Prakashan, Varanasi
8. The Asiatic Society, Calcutta
9. Tirupati Devsthan, Tirupati
10. Shri Aurobindo Kapali Shastri Vaidik Sanskriti Sodh Sansthan Bengaluru
11. Shri Krishna Janm Bhoomi Seva Sansthan, Mathura
12. Naag Prakashan, Delhi
13. Motilal Banarsidass (MLBD), Delhi
14. Chukhamba Sanskrit Prakashan, Delhi
15. Vaidik Vangmay Prakashan, Prayag
16. Kalyan Mandir Prakashan Allahabad
17. Amarswami Prakashan, Delhi
18. Adwait Ashram Prakashan, Kolkatta
19. Vijay Kumar GovindRam HasaNand, Delhi
20. Chinmaya Mission Prakashan
21. Hindustani Academy, Allahabad
22. Uttar Pradesh Hindi Granth Academy, Lucknow
23. Bihar RashtraBhasa Parishad, Patna
24. Hope Prakashan, Delhi, Gurgoan
25. JanGanna Vibhag, Jaipur
26. Jagdish Sanskrit Pustakalaya, Jaipur
27. Hansa Prakashan, Jaipur
28. Nagari Pracharni Sabha, Varanasi
29. Hindi Sahitya Samelaaan, Allahabad
30. Shree Pitambara Sanskrit Parishad, Datia

31. Munshilal Manoharlal, Delhi
32. Vishwavidyalaya Prakashan Varanasi
33. Osho Prakashan
34. Megh Prakashan, Delhi
35. Diamond Books, Delhi
36. LokBharati Prakashan, Allahabad
37. Shree Aditya Prakashan, Delhi
38. Prabhat Prakashan, Delhi
39. Oriental Institute (MS University), Baroda
40. Shree GorakhNaath Mandir Prakashan, Gorakhpur
41. Shree Shankaracharya Dwarka ShardaPeeth, Dwarka
42. Sampurnanand Sanskrit Vishwvidyalya, Varanasi
43. Rashtriya Sanskrit Sansthaan, Delhi
44. Bhuwan Vani Trust, Lucknow
45. Tejkumar Book Depot, Lucknow
46. Hindi Pracharak Sansthaan Private Limited, Varanasi
47. Bhartiya Vidya Bhawan, Mumbai
48. Venketeshwara Press, Mumbai, Thane
49. Nirnaya Sagar Press, Mumbai
50. Archaeological Survey of India, Delhi
51. Bihar School of Yog, Munger
52. Indira Ghandi National Centre of Arts, Delhi
53. Sanskriti Sansthaan, Bareli
54. Literary Circle, Jaipur
55. Indra Prakashan, Bhopal
56. Satyam Publishing House, Delhi
57. RajKamal Prakashan, Delhi
58. KitaabGhar, Delhi
59. Sahitya Sodh Sansthaan, Delhi (Sri. Ravindra Seth)
60. RamLal Kapoor Trust, Haryana
61. New Bharatiya Book Corporation, Delhi
62. Yug Nirmaan Yojna, Mathura
63. Shree Saraswati Sadan Prakashan, Delhi
    (Shri. Satyeketu Vidyalankaar)

64. Sasta Sahitya Mandal, Delhi
65. Ayurved Sanskrit Hindi Pustak Bhandar, Jaipur
66. Shivalik Prakashan, Delhi
67. Shri Vallabhacharya Trust Prakashan, Mandavi, Kutch
68. Dewaat Vedaant Foundation, Begaluru
69. Jammu Kashmir Sanskriti Bhasa Vibhag, Srinagar
70. Shri RamTeerth Prakashan, Delhi
71. Eastern Book Linkers, Delhi
72. Bhartiya Vidya Prakashan, Delhi, Varanasi
73. Hindi Sahitya Sadan, Delhi (Sri. GuruDutt)
74. Bhartiya Gyanpeeth, Delhi
75. Dhanuka Prakashan, Delhi

Shri Neelkanth Gyanganj: Research on Ancient Texts

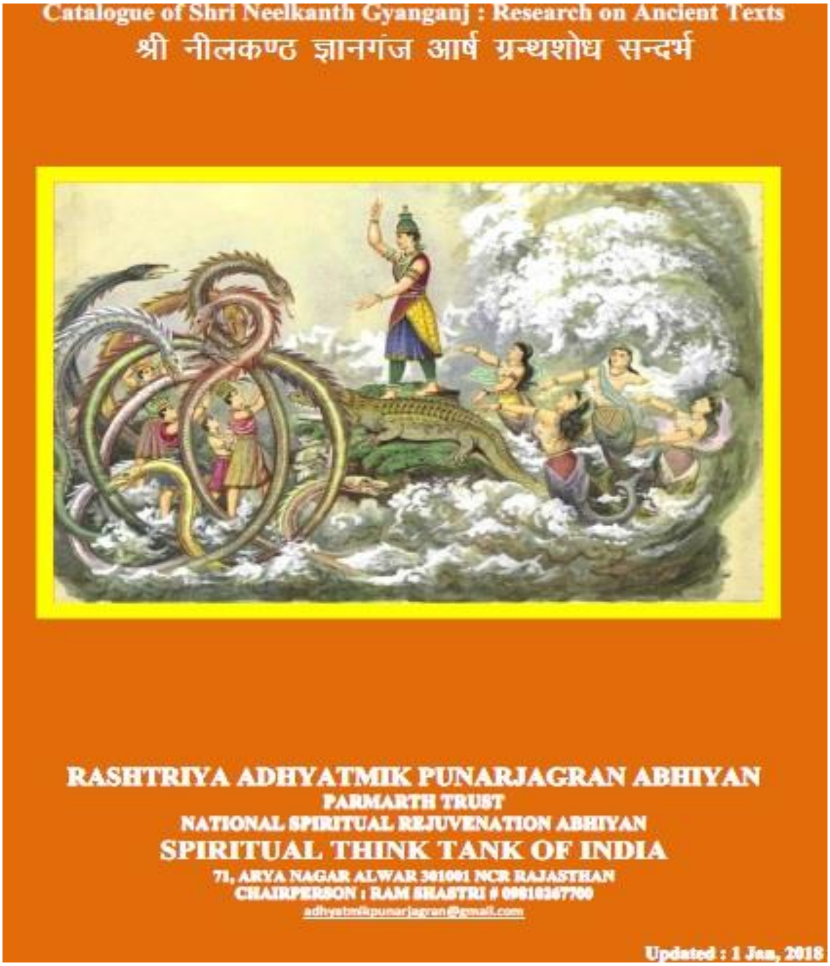

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

For the last three-four decades Shri Ram Shastri has been a keen reader of various texts and books on 'Brahma Satya Jagad Mithya'.

He began by devoting himself to establishing a place for meditation and study of prayers in the spiritual texts in the premises of Maharishi Parashar's 'Rakshak Nashak Yagya Sthal'. He was able to collect a few thousand books. Unfortunately, this work had to be abruptly suspended after the cold-blooded murder of Mahatma Shri Jagmohan Das, the Peethdheshwar of the Parasar Peeth.

His father Pandit Gauri Shankar Shastri and mother Shrimati Shanti Shastri wanted to start a Vedic centre in their 71, Aryanagar bungalow in Alwar. During the lifetime of Shrimari Shanti Shastri was founded the Shri Neelkanth Gyanganj on 22 July, 2011. She died on June 2, 2012. The Neelkanth Gyanganj began with a collection of 800 volumes and now has about 6,000 on oriental science. Between 2011 and 2024 began the campaign to collect ancient texts and other written material from various publishers in the country.

A peculiar problem was that the publication of many prominent texts had either stopped or they were not available with the publishers who included : Swyadhyay Mandal, Pardi; Arvind Ashram; Nirnay Sagar Press, Mumbai, Vanivilas Press, Shrirangam; Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune; Rajasthan Prachya Vidya Sansthan; Sri Krishnajanmabhoomi Seva Sansthan, Mathura, Motilal Banarsidas, Lahore-Delhi; Oriental Institute, Vadodara; Hindi Pracharak Sansthan, Varanasi; Hindustani Akademi, Allahabad; Indian Press, Prayag; Praveen Prakashan, Delhi; Rashtriya Jangana, Jaipur; Tirumalai Tirupati; Sampoornanand Sanskrit Vishwavidyalay, Varanasi; The Asiatic Society, Kolkata; The Theosophical Society, Chennai; Anand Ashram, Pune; Prithvi Prakashan, Varanasi; Bharatiya Vidya Prakashan, Delhi; Shri Sarawati Sadan Prakashan, Delhi; Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, Delhi; Banaras Hindu University Prakashan; ShriPitambra Sanskrit Parishad, Datia; Hindi Pracharak Sansthan, Varanasi; Bharat Dharma Mahamandal, Varanasi; Vidyashrinyas, Shri Gorakhnath Mandir Prakashan,

Gorakhpur; Coronation Press, Bengaluru; Vastunagmaya Prakashan, Prayag; Aditya Book Service, Delhi and Yaduvansh Nyas, Faizabad.

It remains a problem how to get the lost but useful texts. The publishers have expressed their inability to help. Yet, it was a divine blessing that it was still possible to collect hundreds of rare books and texts. In four years there has been manifold increase in the collection of ancient valuable texts and books which are available for the devotees of spiritual literature at Shri Neelkanth Gyanganj at 71, Arya Nagar, Alwar, Rajasthan India.

Reservoir of Digital Spiritual, Religious Books

It is the need of the hour to have spiritual, religious books available in the digital form. The internet has brought about a revolution that has not left Indian untouched. Curiosity about spiritual and religion matters is drawing people to India which is believed to be the pioneer of ‘Brahmgyan’. It is ironic that there is very little information on the ancient and rare texts in the country.

Indian publishers had started regular publication of spiritual books in the 17^{th} to 19^{th} century. The tragedy was that by the time the 20^{th} century arrived, many of these publishing houses had disappeared. The lovers of ancient spiritual books have little chance of enjoying reading books and texts on their favourite subject.

It will be humble effort to make available in digital form the much valued ancient texts free of cost. It is a herculean task to scan thousands of pages of the immortal works of the past and present them in the digital form. During their long rule the foreign rulers in

Indiahatched a grand conspiracy to destroy Indian culture and traditions under which the Aryans were depicted as invaders. In 1941,participating in the freedom movement, freedom fighter Dr. Sampoornanand was in jail. Dr. Sampoornanand had proved with the help of the text in the Rigveda that India was the ancient land of the Aryans (Rigved is 39 lacs years old).

In the eulogy to the Sun in the Rigveda it is said that the iron-like jaws of Bhuvan Bhaskar Aditya Suryadev do not open easily. Therefore, the recitation of Shri Surya Dev PranabOm is done with jaws closed. NASA of the US has released a video of the sound from Survadev (Sun). It conforms to the prayer of Shrisuryadev Pranab (Om) as mentioned in the Vedas. Therefore, Shri Savitadev-Shri Suryadevhymn has stood the test of science.

It is a matter of pride that the dedicated religious-minded are spending day and night in preserving the ancient texts in the digital form. Scanning thousands of ancient texts is a herculean task. We salute such persons.

Spiritual Music
Register of Spiritual, Religious Music

The ancient Indian practice of ‘Mantra, Tantra and Yantra’ (sacred utterances, mystical practices and science) explains the universal power of the alphabets and the importance of science. The mystique behind the power of the alphabets has been revealed layer by layer by the ancient Rishis and Munis of India. YogirajShrikrishna called Akshar (alphabet) the ParamBrahm, meaning the Ultimate Creator.

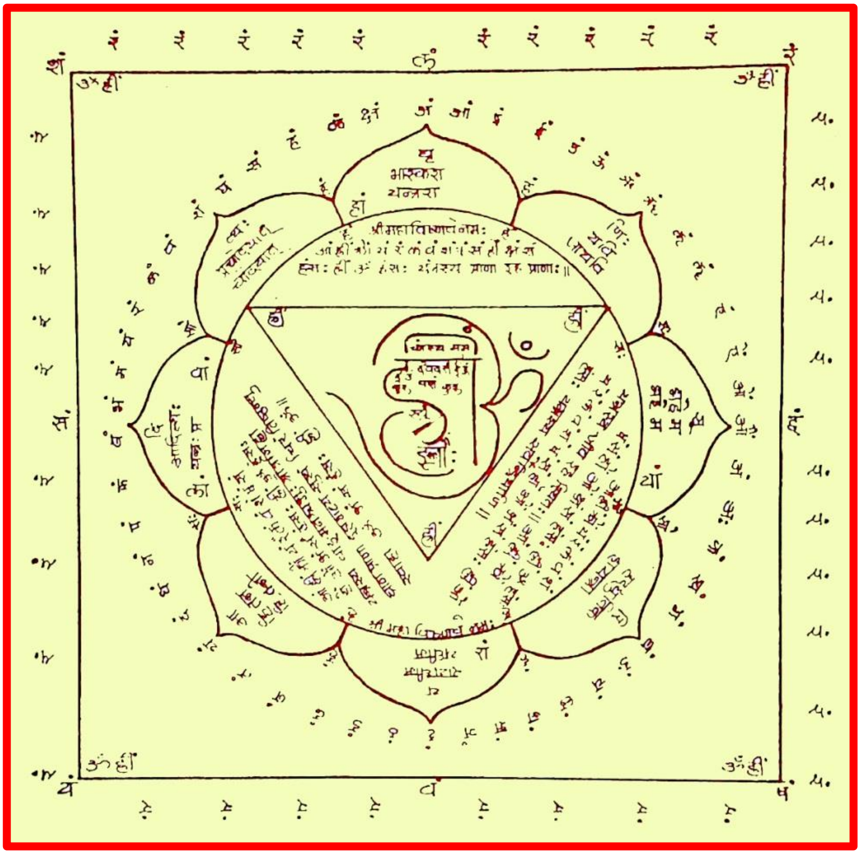

Surya Yantra, 1708 AD

The correct enunciation of the Mantra with the right intonation is of utmost importance. Ancient texts give clear directions on the tone of each syllable in the mantras. Specific directions have also been given on the way how the Stotra, Ashtak, Shatnam, Sahasranam, Digbandhan, Kavach, Hridaya, Saptak, DarunSaptak, Shanti Stotra, Atharvashirsh, Gayatri, Shatisotra, Mool Mantra etc are to be recited. Also, how many times a particular Mantra is to be recited during the course of a day. The exact Swara is important in the recitation of Shri Rudra Path, Shri Shiv Mahim Stotra, Shri Lankeshwar Ravankrit, Shiv TandavStotra, Shri Mahasaraswati Stotra, Shri Devi Kharagmala Stotra, Devi Shaptshati, Shri Lalita

Sahasranam, Shri Laxmi Shasranam, Shri Bala Stotra, Shri Shiv Sahasranam, ShriVishnu Sahasranam, ShriSudarshan Sahasranam, Shri AdityaHridaya, Shri Aditya Shatnam, Shri Sharabh Stotra, Devi Pratyangira Stotra, Shri Devi Shalini Stotra, Shri Mahishasur Mardan Stotra, Shri Mahaganpati Stotra, the Sundarkand of the Mahabharat, Shri Navgrah Stotra etc.

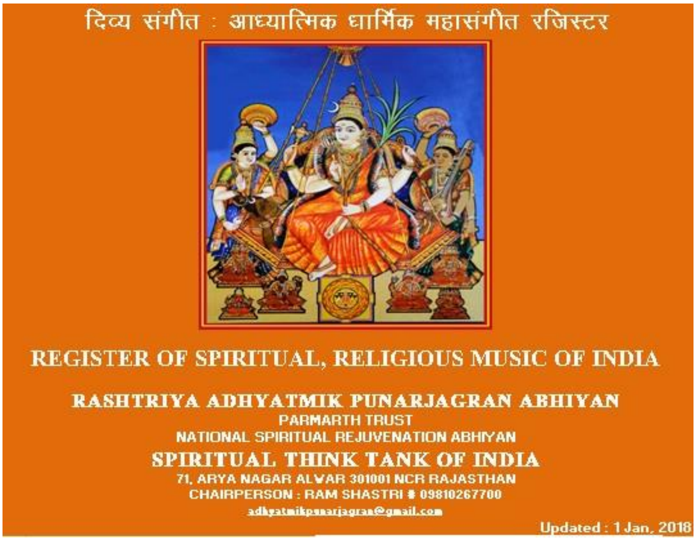

Kindly visit us at;

https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran

The problem today is that there is an acute shortage of those who can correctly recite these Mantras and Stotras in Sanskrit with the right intonations.Incorrect recitation of the Mantras can be harmful in the future. It is also prescribed that before reciting a Mantra its meaning should be clearly understood by the reciter.

Basically, the Mantras recited correctly are capable of releasing tremendous positive energy. If it is not possible to recite a Mantra in the correct ascending and descending order then the alternative is to hear it in as pure a form as possible.

To test the power of the Mantras, physicians have recorded the effect of thesound of the Mantras on patients in hospitals. The results have been astounding.

The worship of the sun by the MahamatyaShriBhaskarRai of Bidar in the 18th century and the recitations by MahakaviKalidas, MahakaviMayour cured a lot of patients afflicted with incurable diseases. Swami VishudhanandParamhansperformed the miracle of bringing to life a dead bird with the help of Shri Surya Vigyan.

After years of debate the Western world has acknowledged that the supreme power of the Mantras in the Vedas has existed in space since time immemorial. It proves that the universe of the alphabets can never be destroyed. The supreme powers of the Vedas will continue to live even after the end of the world. The need of the hour is to unravel the power of the Mantras scientifically for the benefit of the humanity.

With this purpose letters and e-mails are being sent to the 255 companies in the country which deal in spiritual Bhakti music with a request for supplying the list of their publications. In the meanwhile, the list of the available divine music compositions is being presented. The list will be expanded after receiving fresh information. The second phase of our work, God willing, will consist of subject wise categorisation of the musical compositions of Shaiva-Shakt-Vaishnav-Saurya-Ganpati etc.

Mega Register of Ancient Texts : Manuscripts

There have been efforts to destroy the legacy of ancient Indian wisdom that adorned the libraries at the university of Texila (now in

Pakistan) (2500 years ago) and Nalanda. At present many invaluable ancient Indian texts and manuscripts can be found in the museums in Europe and the West. In the last 2500 years innumerous old Indian manuscripts have been illegally transferred to the West. Fortunately due to the Shrutitradition of preserving ancient religious texts newer manuscripts have been collected and preserved. It is a different matter that still many manuscripts on many subjects are either lost or are not in India.

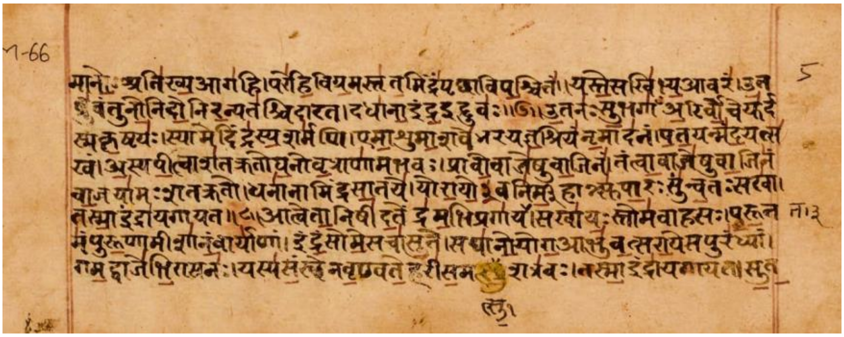

In the collection of ancient manuscripts the following institutions and personalities have played an important role: The Theosophical Society of India, The Asiatic Society, museums around the country, the Pothikhanas of the former rulers of Jaipur, the Rajkumar of SitamauRaghuvir Singh, Swadhyaya Mandal, Bhandarkar Oriental Research Institute, Dr. Sampoornanand Sanskrit University, Rajasthan Prachya VidyaSansthan, the Diwan of Ajmer Sharif, Shri Laxman Joo Maharaj Ashram, the four Peeths of Shri Shankaracharya, Archeological Survey of India, Government Oriental Manuscript Library (Chennai), Jain Vishwa Bharati, Ladnu, Parmarth Nyas, Vridavan Research Institute, Sanjay Memorial Institute, Saraswati Research Oriented Institute of Baroda and Datia Research Institute. Shri Jinvijay Muni initiated in a big the trend for preserving ancient manuscripts by establishing the Rajasthan Prachya Vidya Sansthan in 1950. This institute in Rajasthan has at present a collection of about 125,000 manuscripts. We salute Jinvijay Muni.

It will be relevant to mention here that lakhs of ancient manuscripts are still preserved all across the country in ancient temples, mosques, churches, Jain temples, BuddhistMaths and Parsi places of worship. There are treasures of manuscripts in remote villages, Maths and Havelis in the north-west, southern, eastern, central and northern India but not much is known about them. This is a collection of rare texts. The problem is that to collect them we require someone as selfless and dedicated person as ShriJinvijay Muni.These texts and manuscripts can surface only by constant efforts so that everyone can profit this vast collection of spiritual treasure.

The important thing is that publication of some of the much discussed ancient texts like the Aruna Sanhita of Shri Nimbika Dittacharya's father Shri Arun Rishi (in the collection of Shri Haveliram Joshi), Arun Smriti, Sudarshan Sanhita, Sudarshan Smriti, Sudarshan Chakra (Jyotish), Saur Sanhita and Agastya Muni's Agastya Sanhitaetc is still awaited. It needs to be remembered that reading the ancient texts requires expertise. It also requires knowledge of many languages including the current form of Sanskrit, Prakrit, Brahmi script, Arabic, Persian, Sharda script, Prakrat, Pali, Bangla, Tamil, Telugu, Kannada, Odiya, Sharda Lipi, Assamese, Maithili, Marathi, Gujarati, Kashmiri etc. Scholars say that the contemporary form of Sanskrit is different from Sanskrit of 500 or 1500 years ago. Clearly, "to read ancient manuscripts we require competent people and experts."

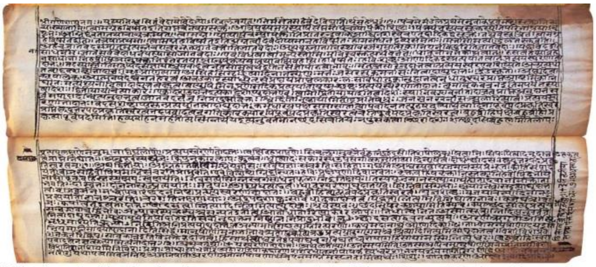

Folios from the *Rigvedapadapatha*, preserved at Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune

We are presenting the list of available manuscripts. In due course, we plan to expand the list as more manuscripts become available.

SL.	NAME OF THE INSTITUTIONS	MANUSCRIPTS
1	Sampurnanand Sankskrit University, Varanasi	1, 40,000
2	Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur	1, 16,123
3	Govt. Oriental Manuscript Library Chennai	72,620
4	TSSM Library, Thanjovour	47,625
5	Adyar Library and Research Centre, Chennai	40,000
6	Orissa State Museum, Bhubaneswar	37,000
7	Asiatic Society, Kolkata	32,000
8	Andhra Pradesh Orinetal Main Library	23, 115
9	Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna	20,060
10	Scindia Oriental Research Institute, Ujjain	18,695
11	Punjab University, Chandigarh	18,395
12	State Central Library, Hyderabad	17,000
13	Vishwabharati University, Shantiniketan	15,354
14	Rampur Raza Library, Rampur	15,000
15	Rajasthan State Archives, Bikaner	14,000
16	Kameshwar Singh Darbhanga Sanksrit University, Darbhanga	13,000
17	University of Calcutta, Kolkata	13,000
18	Aligarh Muslim University,Aligarh	12,000
19	Govt. Manuscript Library, Allahabad	11,000
20	Banaras Hindu University,Varanasi	10,500
21	Safdarjang Museum, Hyderabad	10,00
22	Central Institute of Buddhist Studies, Leh	10,000
23	Osmania University Library, Hyderabad	6,428
24	Shivaji University Library, Kolhapur	5,673
25	Kurukshetra University, Kurukshetra	5,500
26	Poona University, Poona	4,416
27	Patna University, Patna	3,700
28	Tamil University, Thanjavur	3,365
29	National Library, Kolkata	3,258
30	Guwahati University, Guwahati	3,248
31	Utkal University, Utkal	3,053
32	Andhra University Library, Hyderabad	3,000
33	Sanskrit Academy, Osmania University, Hyderabad	3,000

Mantra Yantra

Miracle: Yantra: Divya Chitra

Omiti Brahm, Aumitind Sarvam
(All this is the form of Onkar)

Ishana H SarvavidhyanaIshwar : Sarvabhootanam

Ekan Tanta Sama Kshrity Samyak Kama Krite Tatha

Sarva TaneKrita Ram Tacha Shri Gurumargat
(Tripura Rahasya Charyakhand: ChaturAdhyay)

Mantre Teerth Dwije Deve Daivagya Bhaishje Guruan

Yadushi Bhavana Yasya Sidhbharvati Taddshi

The formless God has been given a concrete shape in the scriptures. Knowledge was given a recognizable form by the power of the alphabet. The alphabet is basically an extension of the dot and line that symbolises the world and the line. The Vedas were composed after sanctified rites were conducted in the cosmos. Contrary to Rigved The God's image is created by worshipping the divine Yantra and Idol. The divine Yantra and images have immense magical powers. This energy the Yantra image has to be awakened. A discussion on the subject is a separate issue. It needs to be clarified that there is a ritual for wearing the Lord Rudra's blessed Rudraksha if its benefit has to be derived. Similar is true for wearing the stones.

It is necessary to obtain knowledge about the right practice to be observed before establishing a Yatra or an image in a house or any other premise.

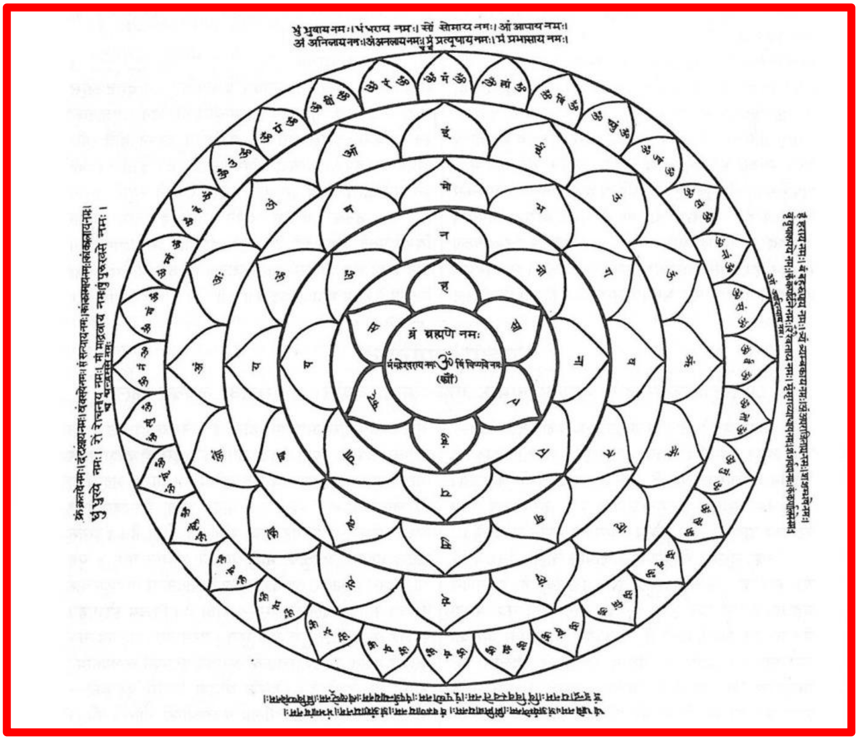

The favourable and unfavourable effect of the Yantra-images varies from individual to individual. The important thing is to seek guidance for their usage from the Guru.

BHAVATEET DHYAN YOG

‘Omityakasharbrahmvyaharnmamnusmaran
Y prayatitayjandeham s yatiparmaahgatim
Padmamvishwakarestitham
Namamivedatraylochanamtamah

DharmastuDravyarupenbrahmananirmitahpura
Tadyeyagangotivikhyatarinustotrahvasundhare
(Rigveda: 4.58.3)
AthapiPratyakshkrata: Stotarebhavanti(Nirukt)
Rachoaksharparmevyovanyasmin deva adhivishwanisheduh
Yastannvedkrimchakirianyati y ittadidutsaimesamaste
Karmanaive hi sansihimmastithijanakadya
Loksangrahmevapisanpshayankartumahasi
(Gita: 3.20)

RAPA also has a fully vetted database of all Pan India leading govt and private universities, Ved Pathshalas, Peethas, Mathas, Research Institutes, Libraries, Spiritual Leaders, Scholars, Thinkers, including all major Foreign Religious Bodies and Leaders and their Embassies. Our more than 20, published Granthas and books, since last years are regularly posted by us to all in our database.

It is our great pleasure to inform you that our Research Compilations namely;
Kailas Maha Rhasyam (English)
Kailas Maha Rhasyam (Hindi)
Ved Aushidhi Kalptaru
Varun Vidya
Prithvi Vidya
Surya Vidya
Akash Vidya
Vayu Vidya
Rudra Vidya
Vishnu Vidya
Kindly visit us at;
https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran.

Our 10 Granths are available with the following prestigious libraries:

Shankaracharya Sringeri Math, Sringeri; Shankaracharya Sringeri Math, Kudali; Shankaracharya Govardhan Math, Puri; LBS National Academy of Administration, Mussoorie; Indian Institute of Public Administration, Delhi; Sanskrit Pracharini Sabha, Nagpur; Shankaracharya Nyas, Nasik; Bhartiya Itihas Samasodhan Mandal, Pune; Dakhshin Bharat Hindi Pracharini Sabha, Chennai; Panini Vedic University, Ujjain; Mahesh Yogi Vedic University, Katani; India International Centre, Delhi; Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH), Delhi; PMO, Delhi; Raj Bhawan, Jaipur, Raj Bhawan Jharkhand; American Library Congress; US Embassy; Nalanda University, Rajgeer; Shankaracharya Sanskrit University, Kaldi; Gujrat Vidyapeeth; Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar; Sri Chandra Shekhar Saraswati Sanskrit University, Kachipuram; Sampoornanand Sanskrit University, Varanasi; LBS Sankrit Univesity, Delhi; Jain Vishva Bharati University, Ladnu; Khudabaksh Library, Patna; KK Handiq Sanskrit Maha Vidyalaya, Assam; Vivekanand Centre, Rameshvaram; Pushkar Math, Pushkar; ICWA, Delhi; Mahrishi Sandipani Vedvidya Pratisthan, Ujjain; CPP - President Library, Delhi; Akhil Bharatiya Vidvat Praishad, Varanasi; Kashi Vidvat Praishad, Kashi; Pratnakirti Sodh Sansthan, Kashi; Ayodhya Naresh Library, Ayodhya; All Central Libraries; Isha Foundation; Tata Trusts; Ved Sansthan, Bangalore; Tejawar Udupi Math; Veer Shaiv Purohit Sabha, Karnataka; NIVS, Bangalore; Jangamwadi Math, Varanasi; Jai Kishan Uttarpada Public Library, Bangal; Dakshina Murti Math, Varanasi; Tibet House, Delhi; Sri Arvind Kapali Shastri Vedic Institute - Sakshi, Bangalore; Moreshwar Ghaisaji Ved Pathshala; RSS Headquarter; VHP Headquarter; PM's Memorial & Library; Mahi Teerth Ashram, Anand; Shankaracharya Jhonteshwar Math Incharge Acharya Ravi Shankar Shastri; PM's Economic Advisory Council; Raghuveer Singh Library, Sitamau; Ved Pathashala Kailash Math, Nasik; Vrindavan - Sri Srivatsa Goswami; Dhakeshwari Peeth; ASI Library; IHC Library; Parliament Library; Asiatic Society'

Adyar Library; BORI; RORI; GOMIL; Swadhyay Mandal; Vedic Samashodhan Mandal; CDS Library; Army Chief Library; Naval Chief; All Indian Sanskrit Universities; Vallbhacharya Peeth; Radha Swami Satsang, Dera Baba Jaimal Singh; Kamkhyapeeth; Tara Peeth; Tripursundaripeeth; Somnath; Jamat-a-Islamic; Catholic Church; Around 30 Foreign Missions; 15 Head of States; HH Pope Lio-XIV; At least 60 Renowned Scholars of India; IIT Kharagpur; Union Education Ministry; Maharaja Gaj Singh Library; K Natwar Singh, Library; Mahrana Mewar Library; German Culture Centre; along with various other prestigious institutions, worldwide.

We at Rashtriya Adhyatmik Punarjagaran Abhiyan are pleased to share with you the launch of our above titled latest book, to download and read our latest book.

Our Digital Publications :
Anshu Bodhini Shastra
Sharabh Vidya
Sri Siddhi
Shukla Yajurved-Rudrapaath
Surya Upasana : Kayakalp
Vichar Sangrah
Savita Devta
Sanskriti Ujjaini
Rigved Bhasya - TV Kapali Shastri
Neel Kanth Gyanganj Catalogue
Divine Music Catalogue
All Sanskrit Publishers Catalogue
Spiritual Rejuvenation
Surya Geeta - Arun Smiriti (to be upload)

Kindly visit us at;
https://archive.org/details/@adhyatmik_punarjagran.

Divine Cooperation Needed

The National Spiritual Regeneration Campaign (Spiritual Think Tank of India) is dedicated to the cause of universal flow of spiritual and religious knowledge. Expressing keen interest in spiritualism will be the most welcome contribution to this noble mission from the intellectuals, scholars and lovers of humanity. This is the reason why monetary help of any sort is being declined in all humility. The divine power of spiritualism will take this programme forward, as indeed it has so far. Hence, "those who value the unique experience of spiritualism are requested to the divine power." However, "contribution in the form of rare books and volumes will be gratefully accepted." The address to which it can be sent is: National Spiritual Regeneration Campaign - Spiritual Think Tank of India, Shri Neelkanth Gyanganj, 71, Arya Nagar, Alwar 301001, Rajasthan, India. The e-mail address is: adhayatmikpunarjagran@gmail.com

Publisher :
Rashtriya Adhyatmik Punarjagran Abhiyan,
Spiritual Think Tank of India
National Spiritual Rejuvenation Abhiyan, Charitable Trust,
71, Arya Nagar, Alwar 301001, NCR, Rajasthan, India
+91-9810267700
adhyatmikpunarjagran@gmail.com

Photo - Paintings	: All Courtesy
Editorial Advisor	: Smt. Shubhra Dutt Surolia
English Bhavanuvad Advisor	: Sri Atul Cowshish
Samasodhan	: Dr. Narain Behari Sharma
Chief Patron	: Brahmleen HH Swami Swaroopanand Saraswati Jagadguru Shankracharya Jyotish Peetham and Dwarka Peetham
Patron	: Sh. Sunil Arora Formal Cheif Election Commission of India HH Maulana Zainul Abedin Dewan-Ajmer Dargah Sharif HH Sh Chandra Nath Ojha, Rajguru of Jaipur Sh. Ravi Shankar Shastri Shankracharyapeethpandit Prof. Bharat Bhushan Vidyalankar

Sincere Thanks for research and reference :

Rajguru Pandit Vidyanath Ojha (Jaipur), Mahant Kailas Nath Yogi, Sri Tipoo Joshi (Jaipur), Mahant Ghanshyam Das (Parashar), Prof. Ila Ghos, Dr. Shyam Sharma, Dr. Sadanand Tripathy, Sri Dharma Veer Panchal Kailasi, Ms Anamika Acharyji, Smt. Sakila Bijoy, Sri P.D. Sharma IITian, Sh. Mahendra Singh, Pandit Ramji Shukla, Ms. Jyotsna Pandey, Sri Vikram Bhardwaj
Sri Tej Karan Jain, Sri Kishor Lal, Sri Amit Goel, Smt. Sudha Shastri
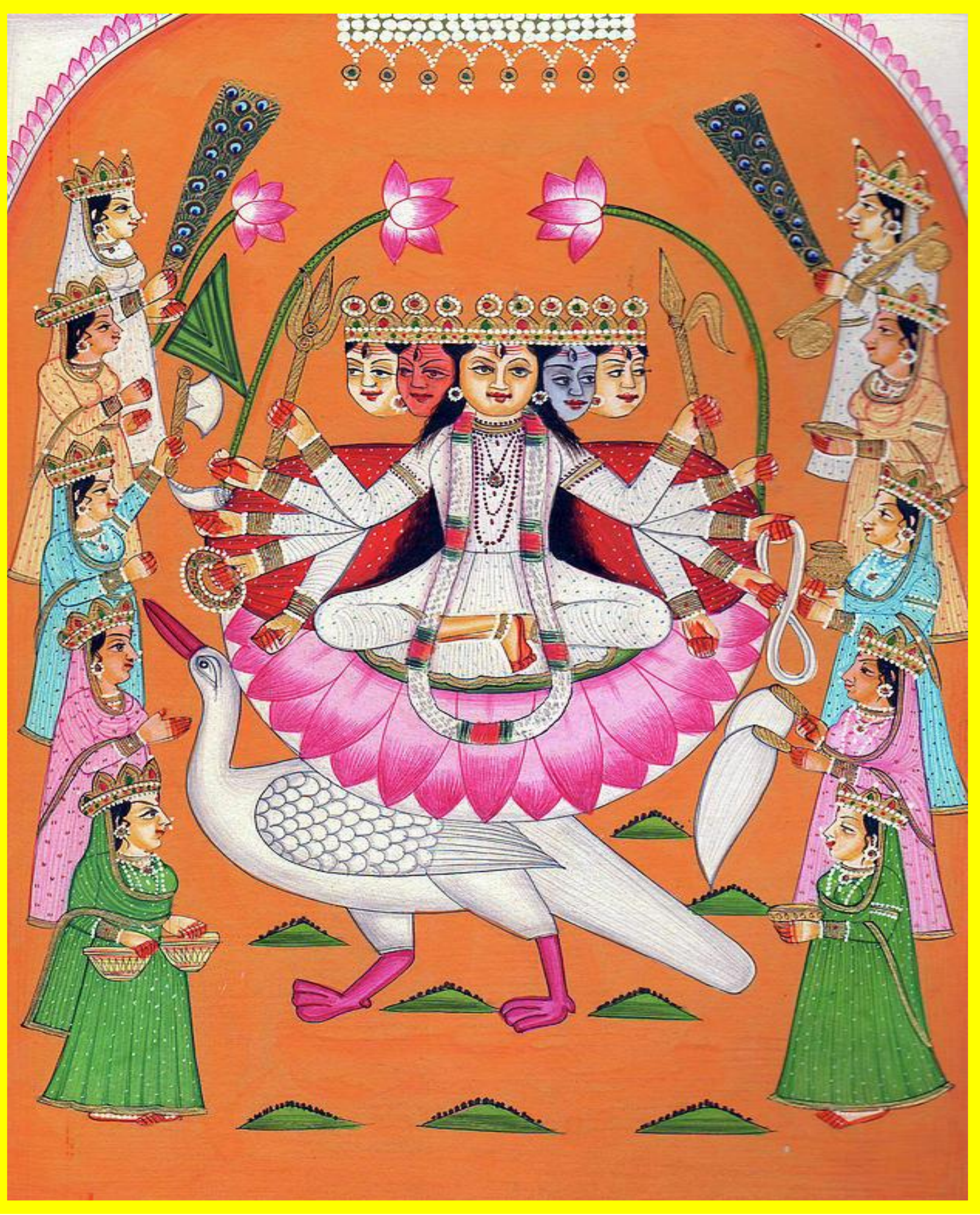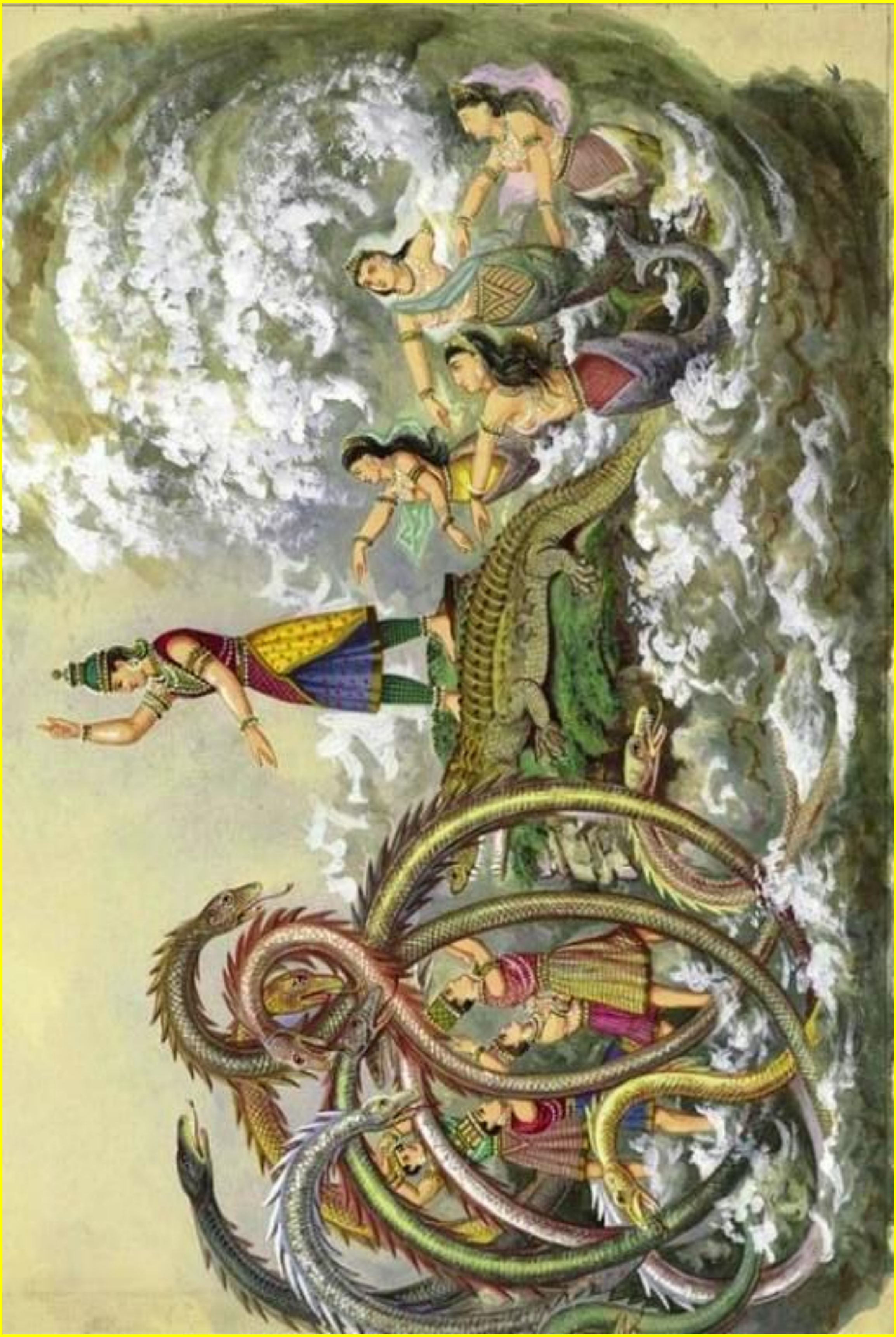
Vikram Samvat 2082